नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 104
दि. 16.01.2026,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

चाचा-भतीजे की जोड़ी बेअसर! पुणे और पिंपरी चिंचवड में बीजेपी का फिर बजता दिख रहा है डंका

(जीएनएस)। पुणे और पिंपरी-चिंचवड़ की सियासी जमीन पर इस बार जो मुकाबला बना, उसे महाराष्ट्र की राजनीति का सबसे दिलचस्प अध्याय माना जा रहा था। एक तरफ भारतीय जनता पार्टी थी, जो पिछले लगभग एक दशक से इन दोनों नगर निगमों में मजबूत पकड़ बनाए हुए है, तो दूसरी तरफ राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के दो धड़ों—शरद पवार और अजित पवार—का वह गठबंधन, जिसे राजनीतिक गलियारों में "चाचा-भतीजे की जोड़ी" के नाम से प्रचारित किया गया। माना जा रहा था कि यह एकजुटता भाजपा के लिए सबसे बड़ी चुनौती साबित होगी, क्योंकि पुणे और पिंपरी-चिंचवड़ लंबे समय से पवार परिवार की राजनीतिक प्रयोगशाला रहे हैं। लेकिन ताज़ा एग्जिट पोल के जो आंकड़े सामने आए हैं, वे कहानी कुछ और ही कह रहे हैं। रुझान बता रहे हैं कि तमाम दावों और रणनीतियों के बावजूद भाजपा एक बार फिर दोनों शहरों में सबसे ताकतवर खिलाड़ी बनकर उभर रही है।

पुणे नगर निगम को महाराष्ट्र की राजनीति का दिल माना जाता है। यह शहर केवल सांस्कृतिक राजधानी ही नहीं, बल्कि शहरी मतदाताओं की सोच और मूड का पैमाना भी है। एग्जिट पोल के अनुसार पुणे नगर निगम में भाजपा 93 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनती दिख रही है, जबकि अजित पवार गुट को 43 सीटें मिलने का अनुमान है। शरद पवार की एनसीपी और कांग्रेस के हिस्से में महज 8-8 सीटें आती नजर आ रही हैं। यह आंकड़े अगर वास्तविक परिणामों में बदलते हैं तो यह विपक्ष के लिए बड़ा झटका होगा, क्योंकि गठबंधन का पूरा गणित इसी उम्मीद पर टिका था कि दोनों पवार एक साथ आएंगे तो भाजपा की बढ़त टूट जाएगी। लेकिन मतदाताओं ने शायद स्थानीय मुद्दों, विकास कार्यों और स्थिर नेतृत्व को ज्यादा

तरजीह दी।

पिंपरी-चिंचवड़ की तस्वीर भी लगभग ऐसी ही है। यह शहर औद्योगिक शक्ति का केंद्र है और इसे "डेट्रॉयट ऑफ द ईस्ट" कहा जाता है। एशिया के सबसे धनी नगर निगमों में शामिल इस शहर की सत्ता पर कब्जा हमेशा प्रतिष्ठा का प्रश्न रहा है। यहां बहुमत का आंकड़ा 64 सीटों का है और एग्जिट पोल के मुताबिक भाजपा ठीक 64 सीटों के साथ सरकार बनाने की स्थिति में है। अजित पवार की एनसीपी को 51 सीटें मिलने का अनुमान है, जबकि शरद पवार गुट केवल 2 सीटों पर सिमटता दिख रहा है। यह स्थिति खास तौर पर इसलिए चौंकाने वाली है क्योंकि पिंपरी-चिंचवड़ अजित पवार का गढ़ माना जाता रहा है और वे खुद इस क्षेत्र के पालक मंत्री भी हैं। चुनाव प्रचार के दौरान उन्होंने पूरी ताकत झोंक दी थी, लेकिन जनता का रुख उनके पक्ष में निर्णायक रूप से मुड़ता नहीं दिखा। इस चुनाव में भाजपा की रणनीति बेहद आक्रामक और जोखिम भरी रही। पुणे में पार्टी ने लगभग 40 मौजूदा नगरसेवकों के टिकट काट दिए। आमतौर पर इसे आत्मघाती कदम माना जाता है, क्योंकि इससे बगावत और भीतरघात का खतरा बढ़ जाता है। हुआ भी यही—कई नाराज नेता अजित पवार गुट में चले गए और भाजपा के खिलाफ खुलकर मैदान में उतर गए। इसके बावजूद एग्जिट पोल भाजपा के पक्ष में दिखाई दे रहे हैं। इससे संकेत मिलता है कि पार्टी ने स्थानीय संगठन, बूथ प्रबंधन और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की छवि पर भरोसा कर जो दांव खेला, वह कारगर साबित हो सकता है।

चाचा-भतीजे के गठबंधन को लेकर शुरुआत में जबरदस्त उत्साह था। शरद पवार को महाराष्ट्र की राजनीति का सबसे अनुभवी रणनीतिकार माना जाता है, जबकि अजित पवार के पास संगठन और जमीनी नेटवर्क की ताकत है। दोनों के अलग-अलग राह पकड़ने के बाद पहली बार ऐसा मौका आया था जब वे स्थानीय चुनाव में फिर एक मंच पर दिखे। राजनीतिक पंडितों का मानना था कि यह समीकरण भाजपा के लिए सबसे बड़ा संकट बनेगा, क्योंकि पुणे और पिंपरी-चिंचवड़ में मराठा, ओबीसी और अल्पसंख्यक मतदाताओं का बड़ा हिस्सा पवार परिवार से जुड़ा रहा है। लेकिन एग्जिट पोल के रुझान बताते हैं कि मतदाता अब पुरानी निष्ठाओं से आगे बढ़कर शहरी विकास, बुनियादी सुविधाओं और पारदर्शी प्रशासन जैसे मुद्दों पर वोट कर रहा है।

भाजपा ने इस पूरे चुनाव को "डबल इंजन विकास" के नारे पर केंद्रित रखा। पार्टी ने मेट्रो परियोजना, स्मार्ट सिटी, सड़कों के जाल, जलापूर्ति और कचरा प्रबंधन जैसे कामों को अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि के रूप में पेश किया। मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री समेत कई वरिष्ठ नेताओं ने लगातार जनसभाएं कीं और यह संदेश देने की कोशिश की कि अगर स्थानीय निकायों में भी भाजपा की सरकार रही तो राज्य और केंद्र की योजनाओं का लाभ सीधे शहरों को मिलेगा। इसके विपरीत विपक्ष ने भ्रष्टाचार, महंगाई और बेरोजगारी को मुद्दा बनाया, लेकिन शायद यह मुद्दे शहरी मतदाताओं को उतना प्रभावित नहीं कर सके।

अजित पवार के लिए यह चुनाव व्यक्तिगत प्रतिष्ठा की लड़ाई भी था। उन्होंने प्रचार के दौरान भाजपा पर कई तीखे हमले किए और नगर निगमों में कथित घोटालों का मुद्दा जोर-शोर से उठाया। उन्होंने यह भी कहा कि अगर उनकी पार्टी को मौका मिला तो पिंपरी-चिंचवड़ को देश का सबसे मॉडल शहर बनाया जाएगा। लेकिन एग्जिट पोल संकेत दे रहे हैं कि जनता ने उनके वादों से ज्यादा भाजपा के पिछले रिकॉर्ड पर भरोसा जताया। खास बात यह है कि युवा और नौकरीपेशा वर्ग का झुकाव इस बार भाजपा की ओर ज्यादा दिखा, जिसे शहरी राजनीति का निर्णायक फैक्टर माना जाता है।

2017 के चुनावों में भी भाजपा ने इन दोनों नगर निगमों में ऐतिहासिक जीत दर्ज की थी। उसके बाद आरक्षण और कानूनी पेचीदगियों के कारण 2022 से लगातार चुनाव टलते रहे। इस दौरान कई राजनीतिक समीकरण बदले, राज्य में सत्ता परिवर्तन हुआ, शिवसेना और एनसीपी में विभाजन हुए, लेकिन पुणे और पिंपरी-चिंचवड़ की जमीनी राजनीति पर भाजपा की पकड़ कमजोर नहीं पड़ी। इस बार का चुनाव उसी पकड़ की असली परीक्षा माना जा रहा था।

तिंथानी कनक गुरु पीठ के अधिष्ठाता सिद्धरामानंद स्वामी का निधन, कर्नाटक में शोक की लहर

(जीएनएस)। बंगलूरू। कर्नाटक के प्रसिद्ध धार्मिक केंद्र तिंथानी कनक गुरु पीठ के प्रमुख और कलबुर्गी डिविजनल कनकगुरु पीठ के अधिष्ठाता सिद्धरामानंद स्वामी का गुरुवार तड़के हृदयाघात से निधन हो गया। उनके आकस्मिक निधन की खबर से पूरे राज्य के धार्मिक और सामाजिक जगत में गहरा शोक व्याप्त हो गया है। स्वामी जी का जन्म नाम मोहन प्रधान था और वे चित्रदुर्ग जिले के मूल निवासी थे। वर्षों की साधना, आध्यात्मिक नेतृत्व और समाज सेवा के कारण वे कर्नाटक के लाखों श्रद्धालुओं के लिए आस्था के केंद्र बने हुए थे। प्राप्त जानकारी के अनुसार बुधवार रात स्वामी जी ने गुरु पीठ में आयोजित भजन-कीर्तन कार्यक्रम में भाग लिया था। कार्यक्रम के बाद अचानक उनका रक्तचाप गिर गया, जिससे उनकी तबीयत बिगड़ने लगी। शिष्यों और सहयोगियों ने तत्काल उन्हें लिंगसुगुर स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां चिकित्सकों ने उनकी स्थिति को गंभीर बताया। तमाम प्रयासों के बावजूद इलाज के दौरान सुबह लगभग 3 बजकर 40 मिनट पर उन्होंने अंतिम सांस ली। चिकित्सकों के अनुसार हार्ट अटैक उनके निधन का प्रमुख कारण रहा।

सिद्धरामानंद स्वामी कर्नाटक के लिंगायत और कनक समुदाय के बीच विशेष रूप से सम्मानित संत माने जाते थे। तिंथानी कनक गुरु पीठ को उन्होंने शिक्षा, सामाजिक सुधार और आध्यात्मिक जागरण का प्रमुख केंद्र बनाया। उनके मार्गदर्शन में अनेक विद्यालय, छात्रावास और सेवा प्रकल्प संचालित हो रहे थे। गरीबों की सहायता, पिछड़े वर्गों के उत्थान और युवाओं में नैतिक मूल्यों के विकास के लिए उन्होंने जीवन भर कार्य किया। उनके प्रवचनों में सामाजिक समानता, मानवीय करुणा और आध्यात्मिक अनुशासन पर विशेष जोर रहता था।

स्वामी जी के निधन की सूचना मिलते ही उनके हजारों अनुयायी गुरु पीठ की ओर उमड़ पड़े। कई स्थानों पर श्रद्धालु मौन जुलूस निकालकर उन्हें श्रद्धांजलि दे रहे हैं। धार्मिक मठों, सामाजिक संगठनों और शैक्षणिक संस्थाओं ने अपने कार्यक्रम स्थगित कर शोक व्यक्त किया है। माना जा रहा है कि उनका अंतिम संस्कार पूरे धार्मिक विधि-विधान के साथ तिंथानी गुरु पीठ परिसर में ही किया जाएगा, जहां बड़ी संख्या में संत-महात्मा और गणमान्य लोग उपस्थित रहेंगे।

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने स्वामी सिद्धरामानंद के निधन पर गहरा शोक प्रकट किया है। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि स्वामी जी का जीवन समाज सेवा और आध्यात्मिक चेतना को समर्पित था। उनके मार्गदर्शन में अनेक कल्याणकारी योजनाएं आगे बढ़ीं और लाखों लोगों को दिशा मिली। मुख्यमंत्री ने इसे राज्य के लिए अपूरणीय क्षति बताते हुए कहा कि सरकार उनके आदर्शों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध रहेगी। उपमुख्यमंत्री, कई मंत्रियों और विपक्षी नेताओं ने भी शोक संदेश जारी कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। धार्मिक विशेषज्ञों का मानना है कि सिद्धरामानंद स्वामी ने परंपरा और आधुनिकता के बीच सुंदर संतुलन स्थापित किया। उन्होंने युवाओं को शिक्षा से जोड़ने, नशामुक्ति, महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास जैसे विषयों पर निरंतर काम किया। कोरोना काल में भी गुरु पीठ की ओर से भोजन वितरण और चिकित्सा सहायता के व्यापक अभियान चलाए गए थे, जिनकी पूरे राज्य में सराहना हुई थी। स्वामी जी स्वयं इन अभियानों का मार्गदर्शन करते थे। उनके निकट शिष्यों का कहना है कि स्वामी जी अत्यंत सरल और करुण हृदय व्यक्तित्व के धनी थे। वे किसी भी आगंतुक से बिना भेदभाव मिलते और उसकी समस्या सुनते थे। उनका मानना था कि धर्म का वास्तविक अर्थ मानव सेवा है। यही कारण है कि विभिन्न समुदायों के लोग उन्हें अपना मार्गदर्शक मानते थे। उनके निधन से केवल एक धार्मिक गुरु ही नहीं, बल्कि एक समाज सुधारक और प्रेरणास्रोत का अवसान हुआ है।

तिंथानी कनक गुरु पीठ की प्रबंधन समिति ने बताया कि स्वामी जी के अंतिम दर्शन के लिए विशेष व्यवस्था की जा रही है ताकि दूर-दूर से आने वाले श्रद्धालु उन्हें श्रद्धांजलि दे सकें। राज्य के कई जिलों से भक्तों का आना शुरू हो गया है। सुरक्षा और व्यवस्था के लिए स्थानीय प्रशासन भी सक्रिय है।

दिल्ली हवाई अड्डे पर एअर इंडिया का विमान क्षतिग्रस्त,इंजन में फंसा सामान, बड़ा हादसा टला

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश के सबसे व्यस्त इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर गुरुवार सुबह उस समय हड़कंप मच गया जब एअर इंडिया के अत्याधुनिक एयरबस ए350 विमान का इंजन अचानक क्षतिग्रस्त हो गया। यह घटना ऐसे समय हुई जब विमान रनवे पर टैक्सी कर रहा था और पूरे इलाके में घना कोहरा छाया हुआ था। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार विमान के पास मौजूद एक बैगेज कंटेनर अचानक इंजन की ओर खिंच गया और टर्बाइन में फंस गया, जिससे इंजन के कुछ हिस्सों को नुकसान पहुंचा। गनीमत यह रही कि समय रहते पायलटों और ग्राउंड स्टाफ की सतर्कता से बड़ा हादसा टल गया और सैकड़ों यात्रियों की जान सुरक्षित बच गई। बताया जा रहा है कि यह विमान दिल्ली से न्यूयॉर्क के जॉन एफ. कैनेडी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए रवाना होने वाला था। यात्रियों की बोर्डिंग पूरी हो चुकी थी और विमान उड़ान की तैयारी में रनवे की ओर बढ़ रहा था। इसी बीच ईरानी हवाई क्षेत्र अचानक बंद होने की सूचना मिलने के कारण उड़ान योजना में बदलाव करना पड़ा और विमान को वापस बुलाया गया। लौटने की प्रक्रिया के दौरान

ही यह अप्रत्याशित घटना घटित हो गई। विशेषज्ञों के अनुसार घने कोहरे और सीमित दृश्यता के कारण ग्राउंड उपकरणों की सही स्थिति का अनुमान लगाना कठिन हो जाता है, जिससे इस तरह के जोखिम बढ़ जाते हैं। हादसे के तुरंत बाद विमान के भीतर बैठे यात्रियों में कुछ देर के लिए अफरातफरी का माहौल बन गया। कई यात्रियों ने बताया कि उन्हें हल्का झटका महसूस हुआ और खिड़की से धुआं जैसा कुछ दिखाई दिया, जिससे लोग घबरा गए। हालांकि केबिन क्रू ने तत्परता दिखाते हुए यात्रियों को शांत रखा और आपात प्रोटोकॉल का पालन कराया। पायलट ने भी सूझबूझ दिखाते हुए विमान को नियंत्रित किया और तुरंत एयर ट्रैफिक कंट्रोल से संपर्क कर सुरक्षित पार्किंग बे में ले जाने की अनुमति मांगी। कुछ ही मिनटों में विमान को रनवे से हटाकर अलग स्थान पर खड़ा कर दिया गया।

एअर इंडिया प्रबंधन की ओर से जारी बयान में कहा गया कि इस घटना में किसी भी यात्री या चालक दल के सदस्य को चोट नहीं आई है। विमान को पूरी तरह सुरक्षित तरीके से ग्राउंड कर दिया गया है और तकनीकी विशेषज्ञों की टीम इंजन की विस्तृत जांच कर रही है। कंपनी ने यह भी स्पष्ट किया कि सुरक्षा से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा और विमान तभी दोबारा सेवा में लाया जाएगा जब वह पूरी तरह उड़ान योग्य घोषित हो जाएगा। एयरलाइन के वरिष्ठ अधिकारियों ने माना कि ए350 जैसे आधुनिक विमान में इस तरह की घटना दुर्लभ होती है, लेकिन विदेशी वस्तु का इंजन में प्रवेश कर जाना विमानन जगत की एक गंभीर चुनौती है।

घटना के बाद सबसे बड़ा सवाल यह उठा कि बैगेज कंटेनर जैसी भारी वस्तु इंजन के इतने करीब कैसे पहुंच गई। विमानन विशेषज्ञों के मुताबिक हवाई अड्डों पर ग्राउंड हैंडलिंग के दौरान सख्त नियमों का पालन किया जाता है, फिर भी कई बार मानवीय चूक या खराब मौसम के कारण उपकरण अपनी तय जगह से खिसक सकते हैं। दिल्ली हवाई अड्डे पर उस समय दृश्यता बेहद कम थी और कई उड़ानें देरी से चल रही थीं। ऐसे में ग्राउंड ऑपरेशन पर दबाव बढ़ जाता है। माना जा रहा है कि इन्हीं परिस्थितियों में यह दुर्घटना हुई। यात्रियों की असुविधा को देखते हुए एअर इंडिया ने तुरंत वैकल्पिक व्यवस्थाएं शुरू कर दीं। एयरलाइन ने प्रभावित यात्रियों को दूसरी उड़ानों में स्थान देने, होटल में ठहराने और रिफंड की सुविधा प्रदान करने की घोषणा की। कई यात्रियों को न्यूयॉर्क के लिए अगले उपलब्ध विमानों में समायोजित किया गया, जबकि कुछ ने यात्रा स्थगित करने का विकल्प चुना। कंपनी के प्रवक्ता ने कहा कि यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा सर्वोच्च प्राथमिकता है और किसी को भी परेशानी में नहीं छोड़ा जाएगा। सोशल मीडिया पर भी एयरलाइन ने हेल्पलाइन नंबर जारी कर यात्रियों से संपर्क करने का अनुरोध किया।

सैन्य ताकत : आधुनिक और जांबाज यूनिट से बढ़ेगी सेना की ताकत

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारतीय सेना समय के साथ खुद को लगातार नए रूप में ढाल रही है। आधुनिक युद्ध की बदलती चुनौतियों, हाइब्रिड वॉरफेयर, ड्रोन हमलों और सीमापार आतंकवाद के खतरे को देखते हुए सेना ने अपनी संरचना और रणनीति में बड़े बदलाव किए हैं। इसी दिशा में एक ऐतिहासिक कदम के रूप में 'भैरव बटालियन' नाम की नई घातक यूनिट तैयार की गई है। यह बटालियन न केवल तकनीक और रणनीति के लिहाज से अत्याधुनिक है, बल्कि इसके जवानों को मानसिक और शारीरिक रूप से भी बेहद कठिन परिस्थितियों के लिए तैयार किया गया है। आने वाले गणतंत्र दिवस पर यह यूनिट पहली बार कर्तव्य पथ पर मार्च करेगी, जो देश के लिए गौरव का क्षण होगा। भैरव बटालियन को इस तरह डिजाइन किया गया है कि यह किसी भी मोर्चे पर तुरंत तैनात होकर कार्रवाई कर सके। आज का युद्ध केवल बंदूकों और टैंकों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें साइबर स्पेस, ड्रोन, इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भी बड़ी भूमिका हो गई है। इसी बदलाव को समझते हुए सेना ने यह यूनिट बनाई है, जिसमें अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ जवानों को एक साथ लाया गया है। इस बटालियन में इन्फैंट्री के साथ-साथ तोपखाना, एयर डिफेंस, सिग्नल और तकनीकी शाखाओं के चुने हुए सैनिक शामिल हैं, ताकि किसी भी तरह की स्थिति में यह टीम स्वतंत्र रूप से ऑपरेशन चला सके।

सेना के सूत्रों के अनुसार भैरव बटालियन का मूल सिद्धांत 'फाइट टुनाइट' है, यानी अगर आज रात ही युद्ध छिड़ जाए तो यह टुकड़ी बिना किसी अतिरिक्त तैयारी के मैदान में उतर सके। पारंपरिक सेना इकाइयों को बड़े ऑपरेशन से पहले लंबी तैयारी, लॉजिस्टिक सपोर्ट और योजना की जरूरत पड़ती है, लेकिन यह यूनिट मिनटों में एक्शन मोड में आ सकती है। इसे क्विक रिएक्शन फोर्स की तर्ज पर विकसित किया गया है, जो सीमित समय में अधिकतम नुकसान पहुंचाने की क्षमता रखती है। इसका उद्देश्य स्पेशल फोर्सेज और सामान्य पैदल सेना के बीच एक मजबूत कड़ी बनना है, ताकि विशेष कमांडो दस्ते केवल सबसे जटिल मिशनों पर ध्यान दे सकें।

भैरव बटालियन के जवानों का चयन बेहद कड़े मानकों पर किया जाता है। केवल शारीरिक फिटनेस ही नहीं, बल्कि मानसिक दृढ़ता, निर्णय लेने की क्षमता और तकनीकी समझ भी परखी जाती है। इन्हें शहरी युद्ध, पहाड़ी इलाकों में लड़ाई, रेगिस्तानी मोर्चों और जंगल वॉरफेयर की विशेष ट्रेनिंग दी जाती है। ड्रोन संचालन, सटीक निशानेबाजी, नाइट विजन उपकरणों का उपयोग और इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस जैसे आधुनिक कौशल इनके प्रशिक्षण का हिस्सा हैं। कई जवानों को विदेशी सेनाओं के साथ संयुक्त अभ्यास का भी अनुभव दिया जा रहा है, ताकि वे अंतरराष्ट्रीय स्तर की रणनीतियों से परिचित हो सकें।

इस बटालियन का नाम भगवान शिव के रौद्र रूप 'भैरव' पर रखा गया है, जो निर्भयता और संहार शक्ति का प्रतीक माना जाता है। इसका आदर्श वाक्य 'अभयम् भैरव' सैनिकों में यह भावना जगाता है कि वे निडर होकर देश की रक्षा करेंगे। यूनिट के प्रतीक चिह्न के रूप में कोबरा को चुना गया है, जो तेज, सटीक और घातक वार के लिए जाना जाता है। सेना का मानना है कि जैसे कोबरा अपने शिकार को पलभर में निष्क्रिय कर देता है, वैसे ही यह बटालियन दुश्मन को संभलने का मौका नहीं देगी। भारत की भौगोलिक परिस्थितियां बेहद विविध हैं। कहीं ऊंचे हिमालयी दर्रे हैं, कहीं घने जंगल, कहीं रेगिस्तान तो कहीं तटीय क्षेत्र। भैरव बटालियन को इन सभी मोर्चों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। लद्दाख और जम्मू-कश्मीर जैसे इलाकों में जहां ऊंचाई और ठंड सबसे बड़ी चुनौती है, वहीं पूर्वोत्तर में घने जंगलों और दुर्गम रास्तों में लड़ाई के अलग तरीके अपनाने पड़ते हैं।

भारतीय सीमा में घुसी पाकिस्तानी नाव जब्त, कोस्ट गार्ड ने नौ लोगों को दबोचा

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारतीय कोस्ट गार्ड ने अरब सागर में सतर्कता और मुस्तैदी दिखाते हुए एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है। समुद्री सुरक्षा बल ने भारतीय जलक्षेत्र में अवैध रूप से घुसी मछली पकड़ने वाली पाकिस्तानी नाव को जब्त कर लिया और उसमें सवार सभी नौ लोगों को हिरासत में ले लिया। यह घटना अंतरराष्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा के पास हुई, जहां कोस्ट गार्ड नियमित गश्त अभियान चला रहा था।

गुजरात डिफेंस पीआरओ विंग कमांडर अभिषेक कुमार तिवारी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर इस कार्रवाई की आधिकारिक जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि यह ऑपरेशन 14 जनवरी 2026 की रात को अंजाम दिया गया। भारतीय कोस्ट गार्ड का जहाज नियमित पेट्रोलिंग पर था, तभी रडार और दृश्य निगरानी के दौरान एक संदिग्ध नाव भारतीय सीमा के भीतर देखी गई। पूछताछ और चेतावनी देने पर नाव ने रुकने के बजाय पाकिस्तान की दिशा में भागने की कोशिश की, जिससे सुरक्षा एजेंसियों का संदेह और गहरा गया।

कोस्ट गार्ड के जहाज ने तत्काल पीछा करते हुए नाव को घेर लिया और उसे रुकने पर मजबूर कर दिया। जांच में पता चला कि नाव का नाम 'अल-मदीना' है और उस पर नौ पाकिस्तानी नागरिक सवार थे। प्रारंभिक पड़ताल में यह स्पष्ट हुआ कि नाव बिना अनुमति भारतीय जलक्षेत्र में प्रवेश कर चुकी थी, जो समुद्री नियमों और सुरक्षा प्रोटोकॉल का गंभीर उल्लंघन है।

अधिकारियों के मुताबिक जब्त की गई नाव को अब पोरबंदर बंदरगाह लाया जा रहा है, जहां उसकी विस्तृत तलाशी ली जाएगी। सुरक्षा एजेंसियां यह पता लगाने की कोशिश करेंगी कि यह घुसपैठ महज मछली पकड़ने से जुड़ी घटना थी या इसके पीछे कोई अन्य संदिग्ध मंशा थी। हिरासत में लिए गए नौ लोगों से खुफिया और जांच एजेंसियां संयुक्त पूछताछ करेंगी। उनके पहचान दस्तावेजों, नाव में मौजूद उपकरणों और संचार यंत्रों की भी बारीकी से जांच की जाएगी।

समुद्री सुरक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि हाल के वर्षों में भारतीय तटों के आसपास इस तरह की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जा रही है। कोस्ट गार्ड और नौसेना द्वारा आधुनिक निगरानी प्रणाली, रडार नेटवर्क और गश्ती जहाजों की तैनाती से अवैध घुसपैठ की घटनाओं पर काफी हद तक अंकुश लगा है। इसके बावजूद पड़ोसी देशों की ओर से कभी-कभी इस तरह के प्रयास सामने आते रहते हैं, जिन्हें समय रहते नाकाम कर दिया जाता है।

यह कार्रवाई इस बात का प्रमाण है कि भारतीय कोस्ट गार्ड समुद्री सीमाओं की सुरक्षा को लेकर पूरी तरह सतर्क और सक्षम है। सरकार ने भी हाल के वर्षों में तटीय सुरक्षा ढांचे को मजबूत करने पर विशेष जोर दिया है, ताकि किसी भी तरह की संदिग्ध गतिविधि को शुरुआती स्तर पर ही रोका जा सके। पोरबंदर पहुंचने के बाद जांच से इस पूरे प्रकरण की तस्वीर और साफ होगी तथा आगे की कानूनी कार्रवाई तय की जाएगी।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करें कंपनियां

गिग वर्कर्स की हड़ताल और उनके मुश्किल हालात को लेकर समाज में बढ़ती फिक्र के बाद हुए सरकारी हस्तक्षेप से गिग वर्कर्स की बड़ी मुश्किल हल हुई है। कोहरे-ठंड और बेतरतीब ट्रैफिक के बीच गिग-वर्कर्स पर दस मिनट में सामान उपभोक्ता तक पहुंचाने का दबाव एक बड़े तनाव की वजह बना हुआ था। गिग-वर्कर्स को हीमैन मानकर द्रुत गति से वाहन दौड़ाकर अपनी जान जोखिम में डालनी पड़ती थी। कुछ डिलीवरी ब्वॉयज के दुर्घटनाग्रस्त होकर जान गंवाने व घायल होने के भी समाचार थे। अब यह सुखद ही है कि केंद्रीय श्रममंत्री मनसुख मांडविया के हस्तक्षेप के बाद क्विक कॉमर्स कंपनियां कष्टदायक दस मिनट में डिलीवरी की व्यवस्था खत्म करने को तैयार हो गई हैं। इटर्नल के स्वामित्व वाली इकाई ब्लिंकिट, जिसने दस मिनट में डिलीवरी को अपने कारोबार की आक्रामक विज्ञापन रणनीति का हथियार बना लिया था, ने अब अपने मंचों से दस मिनट में डिलीवरी का दावा हटा लिया है। निश्चित रूप से यह अमानवीय ही था कि बेकारी का त्रास झेलते युवाओं पर आनन-फानन दस मिनट में सामान उपभोक्ता तक पहुंचाने का दबाव बनाया जाए। लंबी ड्यूटी, कम पैसा और जल्दी सामान पहुंचाने के दबाव में बड़ी संख्या में गिग-वर्कर्स काम छोड़ जाते थे। आजकल ठंड के मौसम में उपभोक्ता घर से बाहर निकलने से परहेज कर रहे हैं। अतः उत्तर भारत में भीषण सर्दी और कोहरे के बीच दस मिनट में तेजी से सामान पहुंचाना दुष्कर कार्य था। भारत में आम ट्रैफिक की जटिल स्थिति किसी से छिपी नहीं है। सड़क हादसों के कारण उनका जीवन जोखिम में बना रहता था। इतना ही नहीं, कई बार डिलीवरी ब्वॉयज को बहुमंजिला इमारतों और कालोनियों के सुरक्षा गार्डों से जूझना पड़ता था, जिससे उन्हें सामान पहुंचाने में देरी हो जाती थी। फिर उपभोक्ता के मोबाइल पर मिले ओटीपी के बाद उनका सामान डिलीवर माना जाता था। समय पर सामान की डिलीवरी न होने पर उनके कार्य प्रदर्शन का मूल्यांकन कमतर आंका जाता है।

दरअसल, गिग वर्कर्स को अच्छी रैंक तभी मिलती है जब वे दस मिनट में सामान पहुंचा देते हैं, जिसके चलते वे मानसिक तनाव में रहते थे। उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों दस मिनट में डिलीवरी का दबाव झेलते तथा मेहनताने में कमी आदि मांगों को लेकर गिग-वर्कर्स ने देशव्यापी हड़ताल की थी। हालांकि, कंपनी मालिकों ने साल के आखिरी दिनों में उत्सव के माहौल में डिलीवरी बाधित होते देख हड़ताल को कामयाब नहीं होने दिया, लेकिन इस हड़ताल से पूरे देश का ध्यान गिग-वर्कर्स की जायज मांगों की तरफ गया। आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा समेत कई राजनेताओं ने भी गिग-वर्कर्स के मुद्दे को जोर-शोर से उठाया। पिछले दिनों ध्यान आकर्षण के लिए बाकायदा राघव चड्ढा डिलीवरी ब्वॉय की ड्रेस पहनकर सामान डिलीवर करने भी गए। निस्संदेह, डिलीवरी ब्वॉयज का काम बेहद चुनौतीपूर्ण है, काम के घंटे बहुत ज्यादा हैं और उसके अनुपात में मेहनताना बेहद कम है। इन्हीं चिंताओं के बाद केंद्र सरकार द्वारा लाया गया नया लेबर कोड चर्चा में आया, जिसमें उल्लेख है कि गिग वर्कर्स की सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उन्हें पर्याप्त सुविधाएं नियोक्ता कंपनी द्वारा दी जाएं। यह विडंबना ही है कि गिग वर्कर्स की मेहनत से क्विक कॉमर्स कंपनियों का कारोबार तो तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन गिग वर्कर्स की माली हालत नहीं सुधरी है। यही वजह है कि बड़ी संख्या में गिग वर्कर्स थोड़े समय काम करके नौकरी छोड़ देते हैं। निर्विवाद रूप से आज जरूरी है कि गिग वर्कर्स ही नहीं, तमाम असंगठित क्षेत्र के कामगारों को अविलंब सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाया जाए। उन्हें बीमा, न्यायोचित काम के घंटे, समय पर समुचित भुगतान व चिकित्सा आदि सुविधाएं उपलब्ध कराई जानी चाहिए। इस दिशा में कानून बनाना ही काफी नहीं होगा, जरूरत लगातार इस बात की निगरानी की भी होगी कि धरातल पर इन कानूनों का कितना अमल हो रहा है। निश्चित रूप से असंगठित क्षेत्र के हर कामगार की सुध ली जानी चाहिए। तभी देश में श्रम की गरिमा स्थापित हो सकेगी। यही देश की युवा श्रमशक्ति का भी सम्मान होगा।

यूरोपीय नेताओं को गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि बना कर मोदी ने पूरे यूरोप को साध लिया

"हम आपको यह भी बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी की एंतोनियो लुईस सैंटोस दा कोस्टा और उर्सुला वॉन डर लेयेन के साथ पिछले साल हुई संयुक्त दूरभाष वार्ता ने भी स्पष्ट कर दिया था कि बातचीत केवल शिष्टाचार तक सीमित नहीं है।"

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निमंत्रण पर यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष एंतोनियो लुईस सैंटोस दा कोस्टा और यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डर लेयेन भारत आ रहे हैं और वह 77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि होंगे। कोस्टा और लेयेन 16वें भारत यूरोपीय यूनियन शिखर सम्मेलन की सह अध्यक्षता भी करेंगे। भारतीय विदेश मंत्रालय की ओर से जारी बयान में जानकारी दी गयी है कि यात्रा के दौरान कोस्टा और लेयेन राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात करेंगे तथा प्रधानमंत्री मोदी के साथ सीमित और प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता करेंगे। देखा जाये तो भारत के गणतंत्र दिवस समारोह में यूरोपीय यूनियन की शीर्ष उपस्थिति बदलती वैश्विक राजनीति का साफ संकेत है। यह दृश्य यह भी बताता है कि भारत और यूरोप का रिश्ता अब रणनीतिक धरातल पर पहुंच चुका है। हम आपको बता दें कि भारत और यूरोपीय यूनियन 2004 से रणनीतिक साझेदार हैं लेकिन पिछले दो वर्षों में इस रिश्ते ने असाधारण गति पकड़ी है। फरवरी 2025 में यूरोपीय आयोग के पूरे प्रतिनिधिमंडल का भारत आना इस बात का प्रमाण था कि ब्रसेल्स अब नई दिल्ली को केवल एक उभरता बाजार नहीं बल्कि एक अनिवार्य शक्ति मान रहा है। अब गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि बनकर आना उसी निरंतरता की अगली कड़ी है।

हम आपको यह भी बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी की एंतोनियो लुईस सैंटोस दा कोस्टा और उर्सुला वॉन डर लेयेन के साथ पिछले साल हुई संयुक्त दूरभाष वार्ता ने भी स्पष्ट कर दिया था कि बातचीत केवल शिष्टाचार तक सीमित नहीं है। व्यापार, प्रौद्योगिकी, निवेश, नवाचार, रक्षा-सुरक्षा और आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन जैसे मुद्दों पर ठोस प्रगति हुई है। सबसे अहम यह कि भारत व यूरोपीय यूनियन मुक्त व्यापार समझौते को शीघ्र पूरा करने की साझा प्रतिबद्धता दोहराई गई है। वाणिज्य सचिव के अनुसार चौबीस में से बीस अध्याय पूरे हो चुके हैं और शेष पर रोजाना स्तर पर संवाद चल रहा है।

देखा जाये तो यह सब ऐसे समय में हो रहा है जब वैश्विक व्यापार व्यवस्था उथल पुथल के दौर से गुजर रही है। अमेरिका की संरक्षणवादी नीतियां और चीन की आपूर्ति श्रृंखला पर पकड़ ने यूरोप को वैकल्पिक साझेदार खोजने पर मजबूर किया है। इसी क्रम में जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मर्ज ने भारत यात्रा के दौरान संकेत दिया था कि जनवरी के अंत तक मुक्त व्यापार समझौता संभव है। उनका यह कहना कि दुनिया दुर्भाग्यपूर्ण संरक्षणवाद के पुनरुत्थान से गुजर रही है दरअसल भारत यूरोप निकटता की वैचारिक जमीन को रेखांकित करता है।

हम आपको बता दें कि यूरोपीय यूनियन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है और 2024 में द्विपक्षीय व्यापार 120 अरब यूरो तक पहुंच चुका है। बताया जा रहा है कि प्रस्तावित समझौता केवल शुल्क कटौती तक सीमित नहीं होगा बल्कि खनिज, स्वास्थ्य, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और उन्नत विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में नई साझेदारी की राह भी खोलेगा। साथ ही भारत मध्य पूर्व यूरोप आर्थिक गलियारा जैसी परियोजनाएं भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के केंद्र में स्थापित करेंगी।

हम आपको बता दें कि यूक्रेन संघर्ष पर भी भारत और यूरोप के बीच संवाद खुलकर हुआ है। प्रधानमंत्री मोदी ने शांति और स्थिरता पर भारत की निरंतर नीति दोहराई है। यूरोपीय पक्ष यह भी मानता है कि भारत की भूमिका संतुलनकारी है और वह संवाद का सेतु बन सकता है।

देखा जाये तो भारत और यूरोपीय यूनियन का यह उभार कोई संयोग नहीं बल्कि सुविचारित रणनीति का परिणाम है। यह साफ दिखता है कि मोदी की विदेश नीति न तो भावुक आदर्शवाद में फंसी है और न ही पुराने गुटों की कैद में है। यह नीति हित आधारित यथार्थवाद और मूल्यों की संतुलित भाषा बोलती है। यही कारण है कि भारत एक ओर रूस से संवाद बनाए रखता है तो दूसरी ओर यूरोप और अमेरिका के साथ भी भरोसेमंद साझेदार बना रहता है।

वहीं यूरोप के लिए भारत अब चीन का विकल्प ही नहीं बल्कि उससे बेहतर साझेदार बनकर उभर रहा है। लोकतांत्रिक व्यवस्था, युवा आबादी, तकनीकी क्षमता और विशाल बाजार भारत को स्वाभाविक आकर्षण देते हैं। साथ ही भारत के लिए यूरोप उच्च तकनीक, स्वच्छ ऊर्जा, रक्षा सहयोग और वैश्विक नियम आधारित व्यवस्था में समर्थन का स्रोत है। यह साझेदारी वैश्विक शक्ति संतुलन को बहुध्रुवीय दिशा में धकेलती है। रणनीतिक स्तर पर इसका सबसे बड़ा प्रभाव एशिया प्रशांत और हिंद महासागर क्षेत्र में दिखेगा। भारत और यूरोप का सहयोग समुद्री सुरक्षा, साइबर सुरक्षा और आपूर्ति श्रृंखला सुरक्षा को मजबूत करेगा। इससे चीन की एकाधिकारवादी प्रवृत्तियों पर स्वाभाविक अंकुश लगेगा वह भी बिना किसी आक्रामक सैन्य टकराव के।

देखा जाये तो मोदी की कूटनीति की विशेषता यह है कि वह भारत को सहभागी के रूप में प्रस्तुत करती है। मुक्त व्यापार समझौते में भी भारत ने अपने श्रम आधारित उद्योगों और उभरते क्षेत्रों के हितों को मजबूती से रखा है। बीस अध्यायों का पूरा होना बताता है कि भारत अब नियम स्वीकार करने वाला नहीं बल्कि नियम गढ़ने वाला देश बन रहा है। बहरहाल, आज जब दुनिया अस्थिरता और अविश्वास से जूझ रही है तब भारत और यूरोपीय यूनियन का यह मेल एक वैकल्पिक मार्ग दिखाता है। यह मार्ग टकराव का नहीं सहयोग का है, प्रभुत्व का नहीं साझेदारी का है। गणतंत्र दिवस समारोह के मंच से दुनिया को यह संदेश जाएगा कि भारत अब वैश्विक एजेंडा तय करने वाली शक्ति है। यही मोदी की विदेश नीति की असली सफलता है और यही आने वाले दशक की भूराजनीति का संकेत भी है।

प्रेरणा

मिठास में बंधा जीवन का सूत्र

मकर संक्रांति भारतीय संस्कृति का ऐसा पर्व है जो केवल ऋतु परिवर्तन या खगोलीय घटना तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के गहरे सामाजिक और आध्यात्मिक अर्थों को भी अपने भीतर समेटे हुए है। उत्तरायण की इस पावन बेला में सूर्य का मकर राशि में प्रवेश केवल प्रकाश के बढ़ने का संकेत नहीं देता, बल्कि मनुष्य के जीवन में सकारात्मकता, ऊष्मा और आपसी जुड़ाव के महत्व को भी रेखांकित करता है। इसी दिन तिल-गुड़ के सेवन की परंपरा है, जो देखने में साधारण लगती है, पर अपने भीतर जीवन का एक गूढ़ संदेश छुपाए हुए है।

सत्संग के उपरांत जब गुरुवर शिष्यों को तिल-गुड़ के लड्डू प्रसाद रूप में दे रहे थे, तो यह दृश्य मात्र प्रसाद वितरण का नहीं था, बल्कि एक मौन शिक्षा का माध्यम था। शिष्य द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर में गुरुजी ने तिल को अलगाव का प्रतीक बताया। सच ही तो है, तिल के दाने छोटे होते हैं, स्वतंत्र होते हैं और एक-दूसरे से जुड़े बिना आसानी से बिखर जाते हैं। उनमें अपनी एक पहचान होती है, लेकिन सामूहिक शक्ति नहीं। यही स्थिति मनुष्य के जीवन में भी देखने को मिलती है। जब व्यक्ति केवल अपने 'मैं' में सिमटा रहता है, तो वह चाहे कितना ही योग्य या समर्थ क्यों न हो, जीवन की ठोकरों में बिखरने की आशंका बनी रहती है। इसके विपरीत, जब वही तिल गुड़ की चाशनी में मिलकर लड्डू का रूप ले लेते हैं, तो उनकी पहचान भले ही अलग-अलग हो, लेकिन उनका अस्तित्व सामूहिक शक्ति में बदल जाता है। अब वे बिखरते नहीं, बल्कि एक-दूसरे के सहारे मजबूत बनते हैं। गुड़ यहाँ केवल मिठास नहीं, बल्कि आत्मीयता, प्रेम, करुणा और अपनत्व का प्रतीक है। यह वह तत्व है जो अलग-अलग स्वभाव, सोच और प्रकृति के लोगों को एक सूत्र में बांध देता है।

मानव समाज में यही गुड़ रिश्तों की मिठास के रूप में दिखाई देता है। परिवार, समाज, संगठन या राष्ट्र—हर जगह यदि केवल तिल की तरह अलग-अलग व्यक्ति हों, तो संरचना कमजोर हो जाती है। किंतु जब इन व्यक्तियों के बीच प्रेम, सम्मान और सहयोग की मिठास घुल जाती है, तो वही समूह अडिग शक्ति में परिवर्तित हो जाता है। इतिहास साक्षी है कि जिन समाजों में आपसी एकता और भावनात्मक जुड़ाव रहा है, वे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी टिके रहे हैं।

आज का आधुनिक जीवन हमें आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देता है, जो अपने आप में गलत नहीं है। परंतु आत्मनिर्भरता और आत्मकेंद्रितता के बीच की रेखा बहुत महीन होती है। जब आत्मनिर्भरता, दूसरों से कट जाने का कारण बन जाए, तब जीवन तिल की तरह बिखरने लगता है। डिजिटल युग में हम सैकड़ों लोगों से जुड़े हैं, परंतु भावनात्मक रूप से अकेले होते जा रहे हैं। ऐसे समय में मकर संक्रांति का यह संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है कि वास्तविक मजबूती संख्या में नहीं, बल्कि संबंधों की गुणवत्ता में होती है।

गुड़ की मिठास एक और संदेश भी देती है। गुड़ प्राकृतिक है, शुद्ध है और अपने भीतर ऊष्मा रखता है। यही कारण है कि सर्दियों में इसका सेवन स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है। इसी तरह रिश्तों की मिठास भी कृत्रिम नहीं होनी चाहिए। दिखावे, स्वार्थ या औपचारिकता से बने संबंध लंबे समय तक टिक नहीं पाते। जब तक संबंधों में ईमानदारी, त्याग और स्नेह की ऊष्मा नहीं होगी, तब तक वे जीवन की ठंडक में जमकर टूट सकते हैं।

मकर संक्रांति पर "तिल-गुड़ घ्या, गोड गोड बोला" कहने की परंपरा इसी भाव को प्रकट करती है। यह केवल मीठा खाने और मीठा बोलने की बात नहीं है, बल्कि पुराने मतभेदों को भुलाकर नए सिरे से रिश्तों को मधुर बनाने का आह्वान है। जीवन में कड़वाहटें आना स्वाभाविक है, लेकिन उन्हें पकड़े रहना विवेक नहीं। गुड़ की तरह मिठास को अपनाकर ही तिल रूपी कटु अनुभवों को एक सुदृढ़ लड्डू में बदला जा सकता है। गुरुजी की यह सरल-सी व्याख्या हमें यह भी सिखाती है कि संगठन की मजबूती केवल नियमों, संरचनाओं या पदों से नहीं आती, बल्कि भावनात्मक एकता से आती है। जब व्यक्ति केवल जिम्मेदारी निभाने के लिए जुड़े हों, तो संगठन औपचारिक बन जाता है। परंतु जब वे आत्मीयता से जुड़े हों, तो वही संगठन परिवार का रूप ले लेता है। ऐसे संगठन समय की मार सहन कर सकते हैं, क्योंकि उनमें बिखराव नहीं, जुड़ाव होता है।

अंततः मकर संक्रांति हमें यह याद दिलाती है कि जीवन की सार्थकता अकेले चमकने में नहीं, बल्कि साथ मिलकर उजाला फैलाने में है। हम सभी तिल की तरह अपनी-अपनी पहचान, गुण और विशेषताओं के साथ इस संसार में आए हैं। परंतु यदि हम गुड़ की मिठास—प्रेम, करुणा और आत्मीयता—से एक-दूसरे से जुड़ जाएं, तो हमारा जीवन केवल मजबूत ही नहीं, बल्कि मधुर भी बन जाता है। यही इस पर्व का शाश्वत संदेश है और यही मानव जीवन की वास्तविक सफलता भी।

अमेरिकी मनमर्जी को रोकने के लिए विश्व को एक होना पड़ेगा

1995 में एक फिल्म आई थी, गैंबलर। गोविंदा-शिल्पा शेट्टी अभिनीत इस फिल्म का एक गाना उन दिनों बेहद मशहूर हुआ था, "मैं चाहे ये करूं, मैं चाहे वो करूं, मेरी मर्जी" निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनॉल्ड ट्रंप ने ये गाना नहीं सुना होगा, लेकिन उन्होंने हाल ही में न्यूयार्क टाइम्स को दिए इंटरव्यू में जो कहा है, उसका भावार्थ कुछ यही निकलता है। उन्होंने कहा है, "सिर्फ मेरा दिमाग ही मुझे रोक सकता है। मेरी अपनी नैतिकता और अपना दिमाग। यहीं वे चीज़ें हैं, जो मुझे रोक सकती हैं। मुझे अंतर्राष्ट्रीय कानून की परवाह नहीं है और न ही इसकी ज़रूरत।" तीन जनवरी को वेनेजुएला में की गई अमेरिकी कार्रवाई के संबंध में पूछे गए सवाल के जवाब में ट्रंप का इन शब्दों का प्रयोग करना दुनिया के लिए निश्चित तौर पर डरावना है। ट्रंप और उनकी सोच पारंपरिक लोकतांत्रिक मुखौटाबाज राजनीति से अलग है, लिहाजा वे खुलकर ऐसा कह रहे हैं। लेकिन सुपर पावर के रूप में स्थापित होने के बाद से ही अमेरिका की सोच और कार्यशैली ऐसी ही रही है। अमेरिका की सत्ता में दो ही पार्टियों का वर्चस्व है। चाहे रिपब्लिकन पार्टी हो या फिर डेमोक्रेटिक पार्टी, दोनों के राष्ट्रपतियों की कार्यशैली कम से कम विदेश मामलों में एक जैसी ही रही है। ट्रंप खुलकर 'अमेरिका फर्स्ट' की नीति और नीयत का हवाला देते हैं, लेकिन दूसरे राष्ट्रपति ऐसा कहने से बचते रहे हैं। हां, उनके भी कदम हमेशा ऐसा ही रहे हैं। अफगानिस्तान में अमेरिकी कार्रवाई हो, खाड़ी युद्ध हो, सूडान स्थित अमेरिकी दूतावास पर आतंकी हमले के बाद अमेरिकी कार्रवाई हो, वियतनाम का युद्ध हो, ईरान पर कार्रवाई हो, हर जगह अमेरिका अपने हितों की रक्षा के लिए कार्रवाई करता रहा है। बेशक उसे कई बार मुंह की खानी पड़ी है। हाल ही में ट्रंप के पूर्व राष्ट्रपति रहे डेमोक्रेटिक पार्टी के जो बाइडन की सेनाएं अफगानिस्तान छोड़कर भाग खड़ी हुईं। वियतनाम का युद्ध लंबा चला था। इसे शुरू किया था डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी ने और जब अमेरिका वियतनाम युद्ध में फंसता नजर आया तो रिपब्लिकन पार्टी के राष्ट्रपति रहे रिचर्ड निक्सन ने सेनाओं की वापसी कराई। कुवैत पर जब इराकी तानाशाह सद्दाम हुसैन ने हमला किया, तब जार्ज बुश सीनियर राष्ट्रपति थे। अमेरिका में एक धारणा रही है कि कुवैत पर कब्जे की कार्रवाई इराकी राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन ने अमेरिकी इशारे पर ही की थी। लेकिन जब मामला उल्टा पड़ गया तो जॉर्ज बुश सीनियर ने संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्तावों की आड़ में ब्रिटेन, फ्रांस जैसे देशों के साथ गठबंधन करके सैनिक कार्रवाई शुरू की। 1990 में अमेरिकी कार्रवाई के चलते इराकी गार्ड को कुवैत को खाली करना पड़ा। इसके बाद इराक अमेरिका का कट्टर दुश्मन बन गया। वैसे लंबे समय तक चले ईरान-इराक युद्ध के पीछे भी अमेरिकी हित काम कर रहे थे। तब दुनिया दो धुवीय थी। एक तरफ सोवियत संघ की अगुआई में विश्व का एक बड़ा हिस्सा काम कर रहा था तो दूसरी ओर अमेरिकी अगुआई में ज्यादातर नाटो देश सक्रिय थे। अफगानिस्तान में जब पिछली सदी के अस्सी के दशक में सोवियत सेनाएं घुसीं, तब सोवियत संघ को काबू करने के लिए अमेरिकी सरकार ने पाकिस्तान का उपयोग किया और एक तरह से पाकिस्तान को अपना अघोषित उपनिवेश बना लिया।

भारत और पाकिस्तान के बीच हुए 1965 और 1971 के युद्धों में अमेरिका में चाहे जिसकी भी सरकार रही हो, अमेरिकी सेनाओं और सरकार ने परोक्ष रूप से पाकिस्तान का साथ दिया और भारत का विरोध किया। साल 2024 में हुए बांग्लादेश में विद्रोह और शेख हसीना के तख्तापलट के पीछे भी अमेरिकी एजेंसियों के हाथ को लेकर संदेह जताया जाता है। साल 2010 के दिसंबर में ट्यूनिशिया में शुरू हुई पिंक क्रांति, जिसे अरब क्रांति के नाम से भी जाना जाता है, की बुनियाद पर अरब देशों में कार्रवाई करने और तख्तापलट के पीछे भी अमेरिकी एजेंसियों के सहयोग को देखा जाता है। अमेरिकी एजेंसियों की ही शह पर लीबिया से गद्दाफी की विदाई हुई, सीरिया अब भी जल रहा है। निश्चित तौर पर अमेरिकी प्रतिकार में शीत युद्ध के दिनों में सोवियत संघ कभी प्रत्यक्ष तो कभी परोक्ष काम करता था, अब दुनिया की दूसरे नंबर की आर्थिक महाशक्ति बन चुका चीन कर रहा है। हाल ही में वेनेजुएला के जिन मादुरो की सत्ता को अमेरिकी सेनाओं ने पलट दिया, उन्हें चीन का खुला समर्थन मिल रहा था। शीत युद्ध के दिनों में सोवियत संघ और उसकी सेना ऐसे हालात में अमेरिकी सेनाओं का परोक्ष विरोध करती थी, वैसा चीन नहीं कर पाया। कह सकते हैं कि अमेरिका में हर सत्ता ने वैश्विक ताकत क्रम में खुद को सर्वोच्च बनाए रखने के लिए अपने हिसाब से दादागिरी दिखाई है। कभी यह दादागिरी अमेरिकी हितों के नाम पर हुई तो कभी दुनिया में लोकतंत्र की स्थापना के नाम पर। कहने के लिए अमेरिका लोकतंत्र का सबसे बड़ा पहरूआ बनता है, लेकिन अमेरिकी हितों, कारोबारियों और हथियार लॉबी के हित में अक्सर वह गैर लोकतांत्रिक तरीके से कार्रवाई करता है। दुनिया का आधुनिक इतिहास इससे भरा पड़ा है। वेनेजुएला इसका ताजा उदाहरण है। ट्रंप जिन अंतरराष्ट्रीय कानूनों को अपने हिसाब से मानने या न मानने की बात कर रहे हैं, दरअसल उन्हें बनाने और संशोधित करने में सबसे ज्यादा योगदान अमेरिका का ही रहा है। विश्व में जब भी कहीं वेनेजुएला जैसी घटना होती है, तब जिनेवा समझौते और अंतरराष्ट्रीय कानूनों का बहुत जिक्र होता है। दरअसल उन्नीसवीं सदी के मध्य तक दुनिया में होने वाले युद्धों के लिए युद्धबंदियों और सैनिकों और युद्धग्रस्त देशों के लोगों को लेकर शत्रु देशों की ओर से की जाने वाली अमानवीय कार्रवाई को रोकने के लिए ना तो कोई कानून था और इसे लेकर कोई प्रयास हुआ था।

अभियान

ठाकुर जी के दर्शन की मर्यादा: दिव्य ऊर्जा, विनम्रता और विज्ञान का अद्भुत संतुलन

हिंदू जीवन-दृष्टि में भगवान के दर्शन केवल नेत्रों की क्रिया नहीं, बल्कि आत्मा की यात्रा माने गए हैं। मंदिर जाना किसी पर्यटन स्थल पर जाना नहीं होता, वह एक आंतरिक तीर्थयात्रा है। जैसे ही व्यक्ति मंदिर के द्वार पर कदम रखता है, बाहरी संसार का कोलाहल पीछे छूटने लगता है। घंटियों की मधुर ध्वनि, शंखनाद, दीपों की आभा और अगरबत्ती की सुगंध मिलकर एक ऐसा वातावरण रचते हैं, जहां मन अपने आप शांत होने लगता है। इसी वातावरण में हमारे पूर्वजों ने कुछ मर्यादाएं विकसित कीं—उन्हीं में से एक है कि ठाकुर जी के ठीक सामने खड़े होकर एकटक दर्शन न किए जाएं। यह बात सुनने में साधारण लग सकती है, पर इसके भीतर अध्यात्म, मनोविज्ञान और सूक्ष्म ऊर्जा विज्ञान की गहरी समझ छिपी हुई है। भारतीय परंपरा में भगवान की प्रतिमा को साधारण वस्तु नहीं माना गया। प्राण-प्रतिष्ठा के बाद वह केवल पत्थर या धातु नहीं रहती, बल्कि एक जीवंत चेतना-केंद्र बन जाती है। भक्त जब उसके सामने जाता है, तो वह किसी आकृति को नहीं, बल्कि उस आकृति के माध्यम से प्रवाहित हो रही दिव्य ऊर्जा को अनुभव करता है। यही कारण है कि मंदिर का गर्भगृह सामान्य स्थानों से अलग अनुभूति देता है। हमारे ऋषियों का मानना था कि यह ऊर्जा इतनी तीव्र होती है कि उसे सीधे और अचानक ग्रहण करना हर व्यक्ति के लिए संभव नहीं। जैसे तेज सूर्य को सीधे देखने से आंखें चकाचौंध हो जाती हैं, वैसे ही परम सत्ता के तेज को भी विनम्रता और क्रमिकता के साथ ग्रहण करना चाहिए। इसलिए परंपरा कहती है कि भक्त थोड़ा हटकर, तिरछे भाव से, सिर झुकाकर दर्शन करे, ताकि यह दिव्यता धीरे-धीरे हृदय में उतरे।

इस मर्यादा का एक गहरा आध्यात्मिक अर्थ अहंकार से जुड़ा है। मनुष्य जब ठीक सामने तनकर खड़ा होता है, तो अनजाने में बराबरी का भाव जन्म ले सकता है—मैं देखने वाला हूं और भगवान देखे जाने वाले। भक्ति की दृष्टि से यह भाव बाधा है। ईश्वर के समीप जाने का मार्ग समर्पण से खुलता है, अधिकार से नहीं। किनारे खड़े होकर दर्शन करने से भीतर दास्य और विनम्रता का भाव जगता है। यह भाव मनुष्य को याद दिलाता है कि वह सृष्टि का केंद्र नहीं, बल्कि उसका एक छोटा-सा अंश है। भक्ति का सच्चा रस तभी पैदा होता है, जब अहं का आवरण थोड़ा-सा भी पिघलने लगे।

वैष्णव परंपरा में दर्शन की जो विधि बताई गई है, वह भी इसी मनोभूमि को तैयार करती है। भक्त को कहा गया कि पहले चरणों के दर्शन करो, फिर धीरे-धीरे दृष्टि को ऊपर उठाओ। यह केवल धार्मिक नियम नहीं, मन को एकाग्र करने की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। चरणों से आरंभ कर मुखारविंद तक पहुंचने में मन एक लय में बंधता है। सीधे सामने खड़े होकर पूरा स्वरूप एक साथ देखने में मन भटक सकता है, पर क्रमिक दर्शन से भाव गहराता जाता है। इस प्रक्रिया में भक्त और भगवान के बीच एक अदृश्य सेतु बनता है, जिसे शब्दों में नहीं बांधा जा सकता।

ब्रजभूमि की परंपराएं इस रहस्य को और स्पष्ट करती हैं। वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर में झांकी कुछ क्षण खुलती और फिर बंद हो जाती है। कहा जाता है कि ठाकुर जी की छवि इतनी मोहक है कि निरंतर दर्शन से भक्त भावावेश में डूब सकता है। लोकमान्यता के अनुसार अत्यधिक और सीधे देखने से 'नजर' लगने का भाव भी जुड़ा है। यह नजर बाहरी अंधविश्वास नहीं, बल्कि मानवीय इच्छाओं और मानसिक तरंगों का सूक्ष्म प्रभाव है। भारतीय संस्कृति हर संबंध में मर्यादा को महत्व देती है—चाहे वह मनुष्य से हो या ईश्वर से।

यदि इस परंपरा को विज्ञान की दृष्टि से परखा जाए, तो चौंकाने वाले तथ्य सामने आते हैं। प्राचीन मंदिरों का निर्माण वास्तु और भू-ऊर्जा के सिद्धांतों पर किया गया था। गर्भगृह को इस प्रकार बनाया जाता था कि वहां पृथ्वी की चुंबकीय रेखाएं और ब्रह्मांडीय ऊर्जा केंद्रित हो सके। मूर्ति के ठीक सामने यह ऊर्जा सबसे सघन होती है। आधुनिक बायो-एनर्जी विज्ञान भी स्वीकार करता है कि तीव्र ऊर्जा क्षेत्र में सीधे खड़े होने से मस्तिष्क की तरंगें प्रभावित होती हैं। हर व्यक्ति की ग्रहण क्षमता अलग होती है, इसलिए किनारे खड़े होकर दर्शन करना ऊर्जा को संतुलित रूप से स्वीकार करने की स्वाभाविक विधि बन जाती है।

मनोवैज्ञानिक पक्ष भी कम महत्वपूर्ण नहीं। किसी के सामने सीधे खड़े होकर आंखों में आंखें डालना चुनौती या बराबरी का भाव पैदा करता है, जबकि तिरछे या झुके हुए भाव से देखना स्वीकार और श्रद्धा की मनोदशा बनाता है। मंदिर में भक्त संवाद करने नहीं, समर्पित होने आता है। वहां तर्क मौन हो जाता है और अनुभूति बोलती है। किनारे खड़े होने की परंपरा मन को ग्रहणशील बनाती है, जिससे प्रार्थना गहराई तक उतरती है।

इस नियम का सामाजिक आयाम भी है। मंदिर सामूहिक उपासना का स्थल है। यदि हर व्यक्ति ठीक सामने खड़ा हो जाए तो अन्य भक्तों के दर्शन में बाधा आएगी। इसलिए यह मर्यादा परस्पर सम्मान और सह-अस्तित्व का व्यवहारिक संदेश भी देती है। भारतीय संस्कृति में धर्म केवल व्यक्तिगत मुक्ति का मार्ग नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने वाली व्यवस्था भी रहा है।

दर्शन का वास्तविक उद्देश्य आंखों को सुख देना नहीं, हृदय को रूपांतरित करना है। जब भक्त किनारे खड़ा होकर, सिर झुकाकर, शांत मन से ठाकुर जी को निहारता है, तब भीतर कुछ पिघलने लगता है। अहं की परतें ढीली पड़ती हैं, विचारों का शोर थमता है और एक अनाम शांति उतरने लगती है। यही वह क्षण है जब मूर्ति केवल रूप नहीं रहती, चेतना का दर्पण बन जाती है। व्यक्ति अपने भीतर झांकने लगता है।

आज का मनुष्य हर वस्तु को अधिकार की भाषा में देखता है। ईश्वर को भी वह उपलब्धि की तरह पाना चाहता है। पर यह परंपरा सिखाती है कि परम के सामने अधिकार नहीं, पात्रता काम आती है। थोड़ा हटकर खड़े होना प्रतीक है—मैं सीखने आया हूं, लेने नहीं। यह भाव जीवन में भी विनम्रता लाता है।

जब भक्त मंदिर से लौटता है, तो उसके हाथ में केवल प्रसाद नहीं होता। उसके साथ एक अदृश्य शांति, संतुलन और करुणा भी चलती है। यही दर्शन की सार्थकता है। ठाकुर जी के सामने से न देखने की मर्यादा हमें याद दिलाती है कि ईश्वर के निकट जाने का मार्ग आंखों से नहीं, हृदय से होकर गुजरता है। यह परंपरा अतीत का बोझ नहीं, भविष्य का प्रकाश है—जो बताती है कि श्रद्धा, विज्ञान और मनोविज्ञान एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि एक ही सत्य के अलग-अलग द्वार हैं।

इसलिए जब अगली बार हम मंदिर में प्रवेश करें, तो इस मर्यादा को केवल नियम समझकर नहीं, बल्कि एक गहरी साधना की तरह स्वीकार करें। तब दर्शन मात्र देखने की क्रिया नहीं रहेंगे, वे जीवन को बदलने वाली अनुभूति बन जाएंगे। और यही भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल संदेश है—बाहरी आंख बंद हो, तो भीतर की आंख खुल जाए।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने 'गांधीनगर पतंग महोत्सव - 2026' का भव्य शुभारंभ कराया

- सेंट्रल विस्टा में आयोजित पतंग महोत्सव में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने पतंग उड़ाकर नगरवासियों को लड्डू और चिक्की का वितरण कर मकर संक्रांति के पावन पर्व की शुभकामनाएं दीं
- 'गांधीनगर पतंगोत्सव' के गुब्बारे को आकाश में उड़ाकर पतंग महोत्सव–2026 का शुभारंभ

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने उमंग एवं उल्लास के उत्तरायण पर्व के अवसर पर बुधवार को गांधीनगर में सेंट्रल विस्टा में सहाय फाउंडेशन द्वारा आयोजित पतंग महोत्सव–2026 का भव्य शुभारंभ कराया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल नगरवासियों के साथ पतंग उड़ाने के आनंद में सहभागी हुए और उत्तरायण पर्व की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने खुले आकाश में पतंग उड़ाकर नगरवासियों को मुरमुरे के लड्डू और चिक्की का वितरण किया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने राज्य के सभी नागरिकों को उत्तरायण की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जिस प्रकार पतंग उड्डयन के पर्व में लोग अपनी पतंग को आकाश में उड़ाते हैं, उसी प्रकार यह पर्व सभी नागरिकों के जीवन में उन्नति

के साथ सुख, शांति और समृद्धि की भी नई ऊंचाइयां प्राप्त कराने वाला उमंग पर्व बने। मुख्यमंत्री ने 'गांधीनगर पतंगोत्सव' के गुब्बारे को आकाश में उड़ाकर पतंग महोत्सव–2026 का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, विधायक श्रीमती रीटाबेन पटेल, उप महापौर श्री नटूजी ठाकोर, स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री गौरांग व्यास, गांधीनगर शहर भाजपा अध्यक्ष श्री आशीष दवे, जिला कलेक्टर श्री मेहुल दवे, विदेशी पतंगबाजों सहित बड़ी संख्या में नगरवासी तथा बच्चे उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल अहमदाबाद में मकरसंक्रांति पर्व के उत्सव में सहभागी हुए

मुख्यमंत्री ने वाडीगाम के निवासियों के साथ पतंग उड़ाकर उत्तरायण पर्व का हर्षोल्लासपूर्वक उत्सव मनाया

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बुधवार को अहमदाबाद के ऐतिहासिक दरियापुर क्षेत्र के वाडीगाम में स्थानीय निवासियों के साथ मकरसंक्रांति पर्व का उत्सव मनाया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर राज्य के सभी नागरिकों को मकरसंक्रांति की शुभकामनाएं देते हुए सुख, शांति और समृद्धि की कामना की।

जिस प्रकार पतंग आकाश की ऊंचाइयों को छूती है, उसी प्रकार गुजरात विकास की नई ऊंचाइयों को प्राप्त करे; इस भावना के साथ मुख्यमंत्री ने वाडीगाम की मूळजी पारेख की पोल में पतंग उड़ाकर पर्व का आनंद लिया। मुख्यमंत्री को अपने बीच देखकर स्थानीय लोगों में विशेष उत्साह देखने को मिला।

मुख्यमंत्री का पोल के निवासियों ने अपने-अपने छतों से हर्षनाद और अभिवादन के साथ भावपूर्वक स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने अभिवादन स्वीकार कर सभी का उत्साह बढ़ाया।

इस उत्सव में मुख्यमंत्री के साथ अहमदाबाद के सांसद श्री दिनेशभाई मकवाणा, दरियापुर के विधायक श्री कौशिकभाई जैन, स्थानीय काउंसलर तथा राजनीतिक अग्रणी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री के साथ पतंगबाजी का आनंद लेने का अवसर मिलने से उपस्थित लोगों और पतंग प्रेमियों के लिए मकरसंक्रांति का यह उत्सव यादगार बन गया।

सोना वायदा 143500 रुपये और चांदी वायदा 287990 के ऑल टाइम हाई स्तर पर पहुँचा: क्रूड ऑयल वायदा में 63 रुपये की तेजी

(जीएनएस)। मुंबई: देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 258568.71 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 47902.09 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 210658.85 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का जनवरी वायदा 38797 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 3030.61 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 40131.88 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 140501 रुपये के भाव पर खूलकर, 143500 रुपये के ऑल टाइम हाई और 140501 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 142241 रुपये के पिछले बंद के सामने 1113 रुपये या 0.78 फीसदी की मजबूती के साथ 143354 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-गिनी जनवरी वायदा 912 रुपये या 0.79 फीसदी की तेजी के संग 116159 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल जनवरी वायदा 126 रुपये या 0.87 फीसदी की तेजी के संग 14546 रुपये प्रति 1 ग्राम हुआ। सोना-मिनी फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 142600 रुपये के भाव पर खूलकर, 143195 रुपये के दिन के उच्च और 142228 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 1087 रुपये या 0.77 फीसदी की तेजी के संग 143034 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन जनवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 142985 रुपये के भाव पर खूलकर, 143671 रुपये के दिन के उच्च और 142800 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 142531 रुपये के पिछले बंद के सामने 1069 रुपये या 0.75 फीसदी की तेजी के संग 143600 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 281698 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 287990 रुपये के ऑल टाइम हाई और नीचे में 280555 रुपये पर पहुंचकर, 275187 रुपये के पिछले बंद के सामने 11682 रुपये या 4.25 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 286869 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 11641 रुपये या 4.2 फीसदी की बढ़त के साथ 288522 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 11704 रुपये या

- कमोडिटी वायदाओं में 47902.09 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 210658.85 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 40131.88 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 38797 पॉइंट के स्तर पर

4.23 फीसदी की तेजी के संग 288571 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

मेटल वर्ग में 5131.18 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा जनवरी वायदा 5.45 रुपये या 0.42 फीसदी की तेजी के संग 1315 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता जनवरी वायदा 2.6 रुपये या 0.83 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 315.05 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इसके सामने एल्यूमीनियम जनवरी वायदा 1.25 रुपये या 0.39 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 319.7 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा जनवरी वायदा 50 पैसे या 0.26 फीसदी चढ़कर 193 रुपये प्रति किलो हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 2660.42 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल जनवरी वायदा 5501 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 5580 रुपये और नीचे में 5448 रुपये पर पहुंचकर, 63 रुपये या 1.14 फीसदी बढ़कर 5578 रुपये प्रति बैरल के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी जनवरी वायदा 52 रुपये या 0.94 फीसदी की मजबूती के साथ 5574 रुपये प्रति बैरल बोला गया। इनके अलावा नैचुरल गैस जनवरी वायदा 307 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 311.6 रुपये और नीचे में 302.8 रुपये पर पहुंचकर, 304.6 रुपये के पिछले बंद के सामने 6.7 रुपये या 2.2 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 311.3 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया। जबकि नैचुरल गैस-मिनी जनवरी वायदा 6.7 रुपये या 2.2 फीसदी की तेजी के संग 311.2 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर पहुंचा।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल जनवरी वायदा 982 रुपये पर खूलकर, 9.7 रुपये या 0.99 फीसदी औंधकर 971.6 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 15002.31 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 25129.57 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 4260.25 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 297.92 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 24.28 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 539.74 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 783.72 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1864.64 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 4.81 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 20307 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 76299 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 24814 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 376252 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 41914 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 14186 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 38755 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 97407 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 24937 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 47303 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स जनवरी वायदा 38497 पॉइंट पर खूलकर, 38797 के उच्च और 38326 के नीचले स्तर को छूकर, 661 पॉइंट बढ़कर 38797 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल जनवरी 5500 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 23.3 रुपये की बढ़त के साथ 102 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस जनवरी 310 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 3.1 रुपये की बढ़त के साथ 16.75 रुपये हुआ।

सोना जनवरी 144000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 398.5 रुपये की बढ़त के साथ 2012.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी जनवरी 285000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 7785 रुपये की बढ़त के साथ 17300 रुपये हुआ। तांबा जनवरी 1375 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 81 पैसे के सुधार के साथ 15 रुपये हुआ। जस्ता जनवरी 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 58 पैसे के सुधार के साथ 4.06 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल जनवरी 5500 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 23.2 रुपये की गिरावट के साथ 34 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस जनवरी 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.4 रुपये की गिरावट के साथ 11.05 रुपये हुआ।

सोना जनवरी 130000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 3 रुपये की बढ़त के साथ 127.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी जनवरी 250000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1179.5 रुपये की गिरावट के साथ 3260 रुपये हुआ। जस्ता जनवरी 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 33 पैसे की नरमी के साथ 1.22 रुपये हुआ।

रायबरेली में ब्रेक फेल होने से दर्दनाक सड़क हादसा, चालक और खलासी की मौत

(जीएनएस)। रायबरेली। गुरुबख्शगंज थाना क्षेत्र के देदौर गांव के पास बुधवार को सड़क सुरक्षा के लिए एक चेतावनी बन गया, जब एक तेज रफ्तार लोडर अनियंत्रित होकर सड़क किनारे बने पक्के दीवार से जा टकराया। हादसे में लोडर चालक सौरभ (21) और कंडक्टर बृजेश (24) की मौके पर ही मौत हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, लोडर रायबरेली की ओर बढ़ रहा था। सामने से आ रहे एक बड़े ट्रक को बचाने के प्रयास में चालक ने ब्रेक लगाने की कोशिश की, लेकिन ब्रेक फेल हो गया। इस दौरान वाहन का एक टायर भी निकल गया, जिससे संतुलन पूरी तरह बिगड़ गया और लोडर सीधे सड़क किनारे बनी पक्की दीवार से जा टकराया। टक्कर इतनी भीषण थी कि वाहन के अगले हिस्से के परखच्चे उड़ गए और आसपास के लोगों में डर और सन्नाटा फैल गया।

हादसे की जानकारी मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंची। स्थानीय लोगों की मदद से गैस कटर की सहायता से वाहन को काटकर चालक और खलासी को बाहर निकाला गया। दोनों को तुरंत जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

पुलिस ने मृतकों की पहचान सौरभ (21) और बृजेश (24) के रूप में की है। शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस ने घटनास्थल का मुआयना शुरू कर दिया है और हादसे के कारणों की जांच में जुट गई है। शुरुआती जांच में ब्रेक फेल होना और वाहन के टायर का निकलना मुख्य कारण बताए जा रहे हैं।

स्थानीय लोग बताते हैं कि यह मार्ग अक्सर भारी वाहनों और लोडरों से भरा रहता है, और तेज रफ्तार के कारण दुर्घटना की संभावना अधिक रहती है। उन्होंने प्रशासन से आग्रह किया है कि इस मार्ग पर सुरक्षा के लिए पर्याप्त चेतावनी संकेत, स्पीड ब्रेकर और नियमित सड़क निरीक्षण किया जाए, ताकि ऐसे हादसों को रोका जा सके।

यह हादसा एक बार फिर सड़क सुरक्षा के महत्व को रेखांकित करता है और यह चेतावनी देता है कि वाहन संचालन में लापरवाही और तकनीकी खामियां अक्सर जानलेवा साबित होती हैं। मृतकों के परिजन और गांव के लोग इस दुर्घटना से स्तब्ध हैं और प्रशासन से न्याय की उम्मीद कर रहे हैं।

भावनगर रेलवे मंडल की मीटर गेज (MG) ट्रेन सेवाओं के समय में संशोधन एवं कुछ ट्रेनों का निरस्तीकरण

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों को सूचित किया जाता है कि सक्षम प्राधिकारी की स्वीकृति से पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल के मीटर गेज (MG) खंड की कुछ ट्रेन सेवाओं के समय में संशोधन किया गया है। यह संशोधन 19 जनवरी 2026 से प्रभावी होगा। उक्त संशोधन के तहत निम्नलिखित मीटर गेज ट्रेन सेवाओं को निरस्त किया गया है—

1.ट्रेन संख्या 52951/52952 जूनागढ़–देलवाड़ा–जूनागढ़

2.ट्रेन संख्या 52929/52930 जूनागढ़–वेरावल–जूनागढ़

यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए, ट्रेन संख्या 52951/52952 (जूनागढ़–देलवाड़ा–जूनागढ़) के निरस्तीकरण के फलस्वरूप जेतलसर से देलवाड़ा की यात्रा करने वाले यात्रियों हेतु तलाला स्टेशन पर अधिकृत कनेक्शन की व्यवस्था की गई है। इसके अंतर्गत ट्रेन संख्या 52949/52950 (वेरावल–देलवाड़ा–वेरावल) के साथ ट्रेन संख्या 52946/52933 (जूनागढ़–वेरावल–जूनागढ़) का अधिकृत संयोजन प्रदान किया गया है।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार विस्तृत विवरण इस प्रकार है:-

1.ट्रेन संख्या 52949 वेरावल-देलवाडा मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से वेरावल स्टेशन से प्रस्थान समय 08.50 बजे तथा देलवाडा स्टेशन पर पहुंचने का समय 12.30 बजे होगा।

2.ट्रेन संख्या 52946 जूनागढ़-वेरावल मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से जूनागढ़ स्टेशन से प्रस्थान समय 06.15 बजे तथा वेरावल स्टेशन पर पहुंचने का समय 10.40 बजे होगा।

3.ट्रेन संख्या 52955 वेरावल-जूनागढ़ मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से वेरावल स्टेशन से प्रस्थान समय 10.20 बजे होगा।

4.ट्रेन संख्या 52933 वेरावल-जूनागढ़ मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से वेरावल स्टेशन से प्रस्थान समय 14.45 बजे तथा जूनागढ़ स्टेशन पर पहुंचने का समय 18.55 बजे होगा।

5.ट्रेन संख्या 52956 जूनागढ़-वेरावल मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 20.01.2026 से जूनागढ़ स्टेशन से प्रस्थान समय 08.00 बजे तथा वेरावल स्टेशन पर पहुंचने का समय 12.10 बजे होगा।

6.ट्रेन संख्या 52950 देलवाडा-वेरावल मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से देलवाडा स्टेशन से प्रस्थान समय 13.00 बजे तथा वेरावल स्टेशन पर पहुंचने का समय 16.35 बजे होगा।

भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने कहा कि संशोधित समय-सारिणी का विस्तृत विवरण संबंधित स्टेशनों पर प्रदर्शित किया जा रहा है तथा रेलवे के अधिकृत माध्यमों के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

कांदिवली–बोरीवली सेक्शन पर छठी लाइन के कार्य के संबंध में पश्चिम रेलवे का मेजर ब्लॉक

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा कांदिवली और बोरीवली सेक्शन के बीच छठी लाइन के निर्माण कार्य को पूरा करने के लिए 20/21 दिसंबर, 2025 की रात से 30 दिनों का ब्लॉक लिया जा रहा है, जो 18 जनवरी, 2026 तक जारी रहेगा। इस ब्लॉक के कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेन सेवाएं प्रभावित होंगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, उपर्युक्त कार्य के संबंध में 16/17 एवं 17/18 जनवरी, 2026 की रात्रि के दौरान बोरीवली और मालाड के बीच अप फास्ट लाइन पर रात 23:15 बजे से 03:15 बजे तक तथा डाउन फास्ट लाइन पर 01:00 बजे से 04:30 बजे तक मेजर ब्लॉक लिया जाएगा।

उपर्युक्त ब्लॉक तथा पाँचवीं लाइन के निलंबन तथा लगाए गए गति प्रतिबंध के कारण कुछ उपनगरीय सेवाएँ निरस्त रहेंगी।

ब्लॉक के कारण प्रभावित होने वाली उपनगरीय ट्रेनों की विस्तृत सूची अनुलग्नक–I एवं II में दी गई है। इस संबंध में विस्तृत जानकारी संबंधित स्टेशन मास्टरों के पास उपलब्ध है। यात्रियों से अनुरोध है कि उपर्युक्त परिवर्तनों को ध्यान में रखकर अपनी यात्रा की योजना बनाएं।

पिपली एवं लाखाबावल स्टेशनों पर कुछ ट्रेनों के ठहराव अस्थायी रूप से निलंबित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों को सूचित किया जाता है कि सक्षम प्राधिकारी की स्वीकृति से फुट ओवर ब्रिज (FOB) का कार्य पूर्ण न होने के कारण पिपली एवं लाखाबावल स्टेशनों पर कुछ ट्रेनों के ठहराव को अस्थायी रूप से निलंबित किया गया है। यह व्यवस्था 10 फरवरी 2026 तक प्रभावी रहेगी।

लाखाबावल स्टेशन पर जिन ट्रेनों का ठहराव अस्थायी रूप से निलंबित रहेगा:

1.ट्रेन संख्या 19209/19210 भावनगर–ओखा–भावनगर एक्सप्रेस

2.ट्रेन संख्या 59551/59552 राजकोट–ओखा-राजकोट पैसेंजर

पिपली स्टेशन पर जिन ट्रेनों का ठहराव अस्थायी रूप से निलंबित रहेगा:

1.ट्रेन संख्या 19210 ओखा–भावनगर एक्सप्रेस

हालांकि, ट्रेन संख्या 19209 भावनगर–ओखा एक्सप्रेस का पिपली स्टेशन पर ठहराव 16 जनवरी 2026 से पुनः बहाल कर दिया गया है, क्योंकि डाउन दिशा में नया प्लेटफॉर्म तैयार हो चुका है।

रेल प्रशासन द्वारा आरक्षित यात्रियों को एसएमएस अलर्ट के माध्यम से सूचित किया जाएगा। साथ ही, ट्रेनों में संभावित 15 मिनट या उससे अधिक की देरी की संभावना को देखते हुए यात्रियों से अनुरोध है कि वे NTES ऐप के माध्यम से अपनी ट्रेन की स्थिति की जानकारी लेते रहें।

यात्रियों से हुई असुविधा के लिए रेलवे प्रशासन खेद व्यक्त करता है और सहयोग की अपेक्षा करता है।

उत्तर पश्चिम रेलवे के रेन स्टेशन पर भावनगर-हरिद्वार द्वि-साप्ताहिक एक्सप्रेस ट्रेन को मिला अतिरिक्त ठहराव

(जीएनएस)। उत्तर पश्चिम रेलवे द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार जोधपुर मंडल के रेन स्टेशन पर भावनगर-हरिद्वार द्वि-साप्ताहिक एक्सप्रेस ट्रेन (19271/19272) को प्रायोगिक आधार पर अतिरिक्त ठहराव प्रदान किया गया है। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार इस ठहराव का विवरण निम्नानुसार है— ट्रेन संख्या 19272 हरिद्वार-भावनगर द्वि-साप्ताहिक एक्सप्रेस, जो हरिद्वार से दिनांक 14 जनवरी, 2026 से प्रस्थान करेगी, उसका रेन (REN) स्टेशन पर आगमन समय 20:43 बजे तथा प्रस्थान समय 20:45 बजे रहेगा। इसी

प्रकार ट्रेन संख्या 19271 भावनगर-हरिद्वार द्वि-साप्ताहिक एक्सप्रेस, जो भावनगर से दिनांक 15 जनवरी, 2026 से प्रस्थान करेगी, उसका रेन (REN) स्टेशन पर आगमन समय 10:30 बजे तथा प्रस्थान समय 10:32 बजे निर्धारित किया गया है।

भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने कहा कि यह ठहराव प्रायोगिक आधार पर प्रदान किया गया है, जो अगले आदेश तक प्रभावी रहेगा। इस अतिरिक्त ठहराव से रेन (REN) स्टेशन एवं आसपास के क्षेत्रों के यात्रियों को आवागमन में उल्लेखनीय सुविधा प्राप्त होगी।

उम्र की दीवार तोड़ता हौसला: 68 वर्ष में एमए की परीक्षा देने वाले विधायक फूल सिंह मीणा की प्रेरक कहानी

(जीएनएस)। राजस्थान के उदयपुर-ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के विधायक फूल सिंह मीणा ने यह साबित कर दिया कि पढ़ाई की कोई उम्र नहीं होती और सीखने की चाह अगर जिंदा हो तो समय की सारी सीमाएं टूट जाती हैं। 15 वर्ष की आयु में परिस्थितियों के कारण पढ़ाई छोड़ देने वाले फूल सिंह मीणा ने लगभग चार दशक बाद फिर से किताबों का हाथ थामा और 68 वर्ष की उम्र में जनार्दन राय नागर विश्वविद्यालय, राजस्थान विद्यापीठ से एम.ए. अंतिम वर्ष की परीक्षा देकर पूरे प्रदेश में एक मिसाल कायम कर दी। उनकी यह शैक्षणिक यात्रा केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि संघर्ष, धैर्य और पारिवारिक सहयोग की अनूठी कथा है। विधायक स्वयं बताते हैं कि इस निर्णय के पीछे उनकी पांच बेटियों की प्रेरणा और जीवनसंगिनी शांति देवी का निरंतर प्रोत्साहन सबसे बड़ा संबल बना। 55 वर्ष की उम्र में दोबारा पढ़ाई शुरू करना आसान नहीं था, लेकिन परिवार के विश्वास ने उनके भीतर नया आत्मबल भर दिया। धीरे-धीरे पढ़ाई फिर जीवन का हिस्सा बनती चली गई और आज वही सफर एमए की परीक्षा तक पहुंच चुका है।

फूल सिंह मीणा का कहना है कि राजनीति में शुचिता, सुशासन और विकास तभी संभव है जब जनप्रतिनिधि स्वयं ज्ञान और अध्ययन से जुड़े रहें। इसी सोच के साथ उन्होंने अपने अध्ययन का विषय भी राजनीति से जुड़ा चुना, ताकि जनसेवा के क्षेत्र में और बेहतर योगदान दे सकें। वे मानते हैं कि शिक्षा केवल डिग्री नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण और समाज सेवा का सशक्त माध्यम है।

उनके अध्ययन का तरीका भी उतना ही प्रेरक है। प्राचार्य संजय लुणावत बताते हैं कि विधायक अपनी व्यस्त राजनीतिक दिनचर्या के बावजूद पढ़ाई के लिए समय निकाल लेते हैं। क्षेत्र भ्रमण के दौरान कार में ऑडियो लेक्चर सुनना, नोट्स पढ़ना और फाइलों के बीच किताबें रखना उनकी दिनचर्या का हिस्सा बन चुका है। लगातार तीसरी बार निर्वाचित विधायक होने, विधानसभा स्पीकर पैनल के सदस्य, जनजाति कल्याण समिति के सभापति और RSCERT की गवर्निंग काउंसिल में दायित्व निभाने के बावजूद उनका अध्ययन के प्रति समर्पण कम नहीं हुआ।

विधायक फूल सिंह मीणा केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं हैं, बल्कि युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत भी बने हुए हैं। उन्होंने बोर्ड और विश्वविद्यालय परीक्षार्थियों को संदेश दिया है कि असफलताओं से घबराकर आत्महत्या जैसा कदम उठाना कायरता है। चुनौतियों का सामना कर शिक्षा को संस्कार, सेवा और राष्ट्रनिर्माण का माध्यम बनाना चाहिए। उनका यह संदेश आज के तनावग्रस्त शैक्षणिक माहौल में बेहद प्रासंगिक है।

महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनकी पहल और भी अनोखी है। वे अपने विधानसभा क्षेत्र की प्रत्येक पंचायत और वार्ड से कक्षा 10 और 12 की टॉपर छात्राओं को प्रतिवर्ष हवाई यात्रा से जयपुर ले जाते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के "बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ" अभियान से प्रेरित इस नवाचार ने पूरे क्षेत्र में शिक्षा के प्रति अद्भुत माहौल बनाया है। शुरुआत में केवल तीन छात्राओं से आरंभ हुआ यह अभियान आज 60 से अधिक बेटियों तक पहुंच चुका है। इस पहल से न केवल बाल विवाह की प्रवृत्ति घटी है, बल्कि अभिभावकों में बेटियों को पढ़ाने का नया उत्साह भी जगा है।

राधास्वामी मत के अनुयायी और बाबाजी गुरिंदर सिंह जी ढिल्लों के शिष्य फूल सिंह मीणा अपनी सादगी, फिटनेस और अनुशासित ड्रेस कोड के लिए भी जाने जाते हैं। विधानसभा में प्रश्न पूछने के मामले में वे "शतकवीर" माने जाते हैं, जो उनकी सक्रियता और जनहित के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

उनकी कहानी यह सिखाती है कि शिक्षा का दीप कभी बुझता नहीं, बस उसे फिर से जलाने का साहस चाहिए। एक जनप्रतिनिधि के रूप में उन्होंने यह संदेश दिया है कि नेतृत्व केवल भाषणों से नहीं, बल्कि व्यक्तिगत आचरण और उदाहरण से बनता है।

आसमान पर चढ़ गया बुलडोजर: अहमदाबाद में 60 फीट ऊंची टंकी पर चला JCB का अनोखा ऑपरेशन

(जीएनएस)। अहमदाबाद के सारंगपुर इलाके में इन दिनों जो दृश्य दिखाई दिया, उसने शहरी विकास और इंजीनियरिंग की दुनिया में एक नई बहस छेड़ दी है। लगभग 60 फीट ऊंची और दस मंजिला इमारत जितनी विशाल पानी की टंकी के ऊपर जब जेसीबी मशीन खड़ी दिखाई दी तो लोगों की आंखों को यकीन नहीं हुआ। आम तौर पर बुलडोजर को जमीन पर अतिक्रमण तोड़ते देखा जाता है, लेकिन यहां वही मशीन आसमान की ऊंचाई पर चढ़कर कंक्रीट के पहाड़ को काट रही थी। इस अनोखे ऑपरेशन का ड्रोन वीडियो जैसे ही सामने आया, पूरे गुजरात ही नहीं बल्कि देशभर में इसकी चर्चा शुरू हो गई।

सारंगपुर की यह पानी की टंकी शहर के इतिहास का एक पुराना गवाह थी। करीब 75 वर्ष पहले बनी यह टंकी लंबे समय तक इलाके में पानी की आपूर्ति का मुख्य साधन रही। समय के साथ नई जल वितरण व्यवस्थाएं बनीं और यह ढांचा धीरे-धीरे अनुपयोगी होता गया। कई सालों से यह टंकी बंद पड़ी थी, लोहे की सीढ़ियां जंग खा चुकी थीं और कंक्रीट में दरारें आ गई थीं। आसपास के लोग इसे खतरे का ढांचा मानने लगे थे, क्योंकि तेज हवा या भूकंप जैसी स्थिति में इसके गिरने की आशंका बनी रहती थी।

इसी बीच कालूपुर रेलवे स्टेशन को विश्वस्तरीय स्वरूप देने की महत्वाकांक्षी योजना बनी। स्टेशन को 16 मंजिला आधुनिक टर्मिनल के रूप में विकसित किया जा रहा है, जिसमें शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, मल्टीलेवल पार्किंग, होटल और अंतरराष्ट्रीय स्तर की यात्री सुविधाएं प्रस्तावित हैं। इस विस्तार के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा यही जर्जर पानी की टंकी थी। इंजीनियरों के सामने सवाल था कि

घनी आबादी वाले इलाके में बिना किसी नुकसान के इतने बड़े ढांचे को कैसे हटाया जाए।

पहला विकल्प नियंत्रित विस्फोट का था, लेकिन आसपास रिहायशी मकान, बाजार और रेलवे परिसर होने के कारण यह तरीका बेहद खतरनाक साबित हो सकता था। दूसरा तरीका था कि नीचे से मशीन लगाकर टंकी को धीरे-धीरे काटा जाए, मगर ऊंचाई और ढांचे की बनावट के कारण यह भी संभव नहीं था। तब विशेषज्ञों ने एक साहसिक योजना बनाई—जेसीबी मशीन को ही टंकी की छत पर पहुंचा दिया जाए।

इस योजना को अमल में लाना आसान नहीं था। कई दिनों तक संरचनात्मक अध्ययन किया गया। टंकी की भार सहने की क्षमता जांची गई, ताकि पता चल सके कि वह जेसीबी का वजन सह पाएगी या नहीं। इसके बाद एक विशाल क्रेन मंगाई गई, जो कई टन वजन उठाने में सक्षम थी। पूरे इलाके को खाली करवाया गया, बिजली की लाइनें हटाई गईं और सुरक्षा जाल लगाए गए। फिर बेहद सावधानी से क्रेन ने जेसीबी को हवा में उठाकर टंकी की छत पर रखा। यह पल देखने वालों के लिए किसी फिल्मी दृश्य से कम नहीं था।

ऊपर पहुंचने के बाद दो प्रशिक्षित ऑपरेटरों ने मशीन संभाली। उन्हें विशेष हार्नेस और सुरक्षा उपकरण दिए गए थे। योजना यह थी कि टंकी को ऊपर से नीचे की ओर गोल घेरे में काटा जाए ताकि मलबा नियंत्रित तरीके से गिरे। हर वार के साथ कंक्रीट के बड़े टुकड़े अलग होते गए और नीचे पहले से तैयार सुरक्षित क्षेत्र में गिराए जाते रहे। नगर निगम की टीम, फायर ब्रिगेड और एंबुलेंस पूरे समय मौके पर तैनात रहीं। किसी भी अनहोनी से निपटने के लिए लगभग एक करोड़ रुपये का बीमा भी करवाया गया था।

स्थानीय लोगों के लिए यह पूरा घटनाक्रम किसी अजूबे से कम नहीं था। आसपास की छतों और गलियों में खड़े लोग मोबाइल से वीडियो बनाते रहे। किसी ने कहा कि ऐसा दृश्य उसने जिंदगी में पहली बार देखा है, तो किसी ने इसे "हवाई बुलडोजर" का नाम दे दिया। सोशल मीडिया पर वीडियो लाखों बार देखा गया और तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं आईं। कुछ लोगों ने इसे प्रशासन की हिम्मत बताया तो कुछ ने सुरक्षा को लेकर सवाल भी उठाए।

इंजीनियरों का कहना है कि इस तरह के ऑपरेशन में सबसे बड़ी चुनौती संतुलन और कंपन को नियंत्रित करना होती है। ऊंचाई पर मशीन चलाने से ढांचे में झटके पैदा होते हैं, जो खतरनाक हो सकते हैं। इसलिए काम बहुत धीमी गति से किया गया। हर चरण के बाद संरचना की जांच होती रही। कई जगह हाथ से कटाई भी की गई ताकि टंकी अचानक न ढह जाए। यह पूरी प्रक्रिया आधुनिक शहरी प्रबंधन और तकनीकी कौशल का उदाहरण बन गई है।

बुलडोजर कार्रवाई आज के दौर में राजनीतिक और प्रशासनिक शब्दावली का चर्चित हिस्सा बन चुकी है, लेकिन अहमदाबाद का यह मामला बाकी सबसे अलग है। यहां किसी अवैध निर्माण को नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक मगर जर्जर ढांचे को वैज्ञानिक तरीके से हटाया जा रहा है। मकसद किसी को डराना नहीं, बल्कि शहर को सुरक्षित और आधुनिक बनाना है।

नगर निगम के अधिकारियों के मुताबिक टंकी का अधिकांश हिस्सा हटाया जा चुका है और अगले कुछ हफ्तों में जगह पूरी तरह साफ कर ली जाएगी। इसके बाद कालूपुर स्टेशन के विस्तार का काम तेज गति से आगे बढ़ेगा। आने वाले वर्षों में यही इलाका अहमदाबाद की नई पहचान बनेगा, जहां पुरानी यादों की जगह आधुनिक सुविधाओं की चमक होगी।

यह घटना केवल एक ध्वस्तीकरण की कहानी नहीं है, बल्कि बदलते भारत की तस्वीर भी है। जहां पुराने ढांचों को सम्मान के साथ विदा कर नई संभावनाओं के लिए रास्ता बनाया जा रहा है। आसमान पर चढ़ा वह बुलडोजर मानो यह संदेश दे रहा था कि विकास के सफर में ऊंचाइयां अब रुकावट नहीं रहीं, बल्कि नई उड़ान का मंच बन चुकी हैं।

गंडक के सन्नाटे में बुझ गईं चार जिंदगियां

(जीएनएस)। मुजफ्फरपुर के अहियापुर इलाके में गंडक नदी के किनारे गुरुवार की सुबह जो दृश्य सामने आया, उसने पूरे जिले को झकझोर कर रख दिया। नदी की लहरों पर उतराते एक महिला और उसके तीन मासूम बच्चों के शव मिले, तो आसपास मौजूद लोगों की रूह कांप उठी। चार दिन से लापता चल रहे इस परिवार का इस तरह अंत होगा, इसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। सूचना मिलते ही पुलिस, प्रशासन और फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंची और पूरे क्षेत्र को घेरकर जांच शुरू कर दी। नदी किनारे जमा भीड़ के बीच बस एक ही सवाल गूंज रहा था—आखिर इन चारों के साथ हुआ क्या?

पुलिस के अनुसार मृत महिला की पहचान ममता के रूप में हुई है, जो स्थानीय ऑटो चालक कृष्ण मोहन की पत्नी थी। उसके साथ मिले तीनों बच्चे भी उसी के बताए

जा रहे हैं। परिजनों ने बताया कि ममता बीते रविवार से घर से लापता थी। वह बच्चों को साथ लेकर निकली थी और फिर वापस नहीं लौटी। परिवार ने हर संभावित जगह तलाश की, रिश्तेदारों और परिचितों से संपर्क किया, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। अंततः अहियापुर थाने में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी। चार दिनों तक उम्मीद और आशंका के बीच झूलते परिजनों को गुरुवार को मिली खबर ने पूरी तरह तोड़ दिया।

स्थानीय लोगों का कहना है कि सुबह कुछ मछुआरों ने चंदवारा पुल के पास नदी में शवों को उतराते देखा। पहले एक शव नजर आया, फिर कुछ दूरी पर तीन और शव दिखे। खबर आग की तरह फैल गई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शवों को बाहर निकलवाया। दृश्य इतना मार्मिक था कि कई लोग अपने आंसू रोक नहीं पाए। छोटे-छोटे बच्चों के निर्जीव शरीर देखकर हर किसी का दिल बैठा जा रहा था। पुलिस ने तत्काल एफएसएल टीम को बुलाया ताकि मौके से वैज्ञानिक साक्ष्य जुटाए जा सकें।

परिवार के अनुसार घटना के दिन कृष्ण मोहन रोज की तरह काम पर निकला था। उसी दौरान ममता बच्चों को लेकर घर से चली गई। वह अपने साथ न तो कपड़े ले गई थी, न ही जरूरी सामान। इससे घरवालों को पहले ही अनहोनी की आशंका होने लगी थी। पड़ोसियों का कहना है कि ममता स्वभाव से शांत थी और किसी से ज्यादा मेल-जोल नहीं रखती थी। ऐसे में अचानक उसका यूं गायब हो जाना सभी को हैरान कर गया था। अब शव मिलने के बाद तरह-तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं।

परिजनों ने इस घटना को महज दुर्घटना मानने से इनकार किया है। उनका आरोप है कि ममता और बच्चों के साथ साजिशन कुछ गलत किया गया है। कुछ रिश्तेदार इसे अपहरण और हत्या का मामला बता रहे हैं, तो कुछ पारिवारिक तनाव की ओर इशारा कर रहे हैं। हालांकि अब तक ऐसा कोई ठोस कारण सामने नहीं आया है, जिससे सच्चाई का पता चल सके। पुलिस हर पहलू की बारीकी से जांच करने की बात कह रही है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कांतेश मिश्रा ने बताया कि शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मौत का सही कारण चिकित्सकीय जांच के बाद ही स्पष्ट होगा।

चार बच्चों के साथ पत्नी के लापता होते ही बिखर गया परिवार, ससुराल में आत्मदाह की कोशिश से दहला अलवर

(जीएनएस)। राजस्थान के अलवर शहर में एक ऐसा हृदयविदारक घटनाक्रम सामने आया है जिसने रिश्तों, विश्वास और पारिवारिक तनाव की काली परतों को एक साथ उजागर कर दिया। चार बच्चों की मां का अचानक घर छोड़कर गायब हो जाना, पति की बेचैनी, ससुराल से टकराव और अंततः तैश में आकर खुद को आग लगा लेने की कोशिश—यह पूरी कहानी किसी फिल्मी त्रासदी से कम नहीं, लेकिन हकीकत इससे कहीं ज्यादा भयावह है। बुधवार दोपहर अलवर सिटी के दिल्ली दरवाजा स्थित गंगा मंदिर के पास जब एक युवक ने अपने ऊपर ज्वलनशील पदार्थ डालकर आग लगाई तो इलाके में अफरा-तफरी मच गई। आग की लपटों में घिरा वह व्यक्ति चीखता हुआ इधर-उधर भागने लगा और देखते ही देखते लगभग 90 प्रतिशत झुलस गया।

घायल युवक की पहचान रवि कुमार उर्फ पुष्पेंद्र पुत्र अमरसिंह जाटव के रूप में हुई है, जो मूल रूप से रणजीत नगर का निवासी है और वर्तमान में धूणी नाथ की बगीची, थाना बगड़ तिराहा क्षेत्र में रहता है। रवि पेशे से टेंपो चालक है और उसके चार छोटे बच्चे हैं—दो बेटे और दो बेटियां, जिनमें सबसे छोटा बेटा महज चार साल का है। पड़ोसियों के मुताबिक रवि पिछले डेढ़ महीने से मानसिक रूप से बेहद परेशान चल रहा था क्योंकि उसकी पत्नी ज्योति अचानक बच्चों के साथ घर छोड़कर चली गई थी। उसने बगड़ तिराहा थाने में गुमशुदगी की रिपोर्ट भी दर्ज कराई, लेकिन पत्नी और बच्चों का कोई सुराग नहीं मिल सका।

घटना के दिन रवि सीधे अपने ससुराल पहुंचा। संयोग से उस समय घर पर कोई मौजूद नहीं था। उसकी सास और परिवार के अन्य सदस्य संक्रांति देने के लिए तूलेड़ा गांव में दूसरी बेटी के ससुराल गए हुए थे। बताया जाता है कि रवि काफी देर तक वहां इधर-उधर टहलता रहा, फिर अचानक उसने अपने ऊपर ज्वलनशील पदार्थ उड़ेल लिया और आग लगा ली। आसपास के लोगों ने धुआं और चीखें देखीं तो दौड़कर उसे बचाने की कोशिश की। गंभीर रूप से झुलसे रवि को पहले अलवर के अस्पताल ले जाया गया, जहां से हालत नाजुक देखते हुए जयपुर रेफर कर दिया गया। डॉक्टरों के अनुसार उसका शरीर लगभग पूरी तरह जल चुका है और उसकी स्थिति बेहद गंभीर बनी हुई है।

इस घटना के बाद रवि के साले और साली ने जो बातें सामने रखीं, उन्होंने पूरे मामले को नया मोड़ दे दिया। ज्योति के भाई मनोज का आरोप है कि रवि अपनी पत्नी के साथ अक्सर मारपीट करता था। घरेलू हिंसा और रोज-रोज के झगड़ों से तंग आकर ही ज्योति ने घर छोड़ने का कदम उठाया। मनोज का कहना है कि बहन के जाने के बाद रवि लगातार उन्हें फोन कर धमकाता था और कहता था कि अगर ज्योति का पता नहीं बताया तो वह ससुराल आकर खुद को आग लगा लेगा। साली ममता ने भी यही बात दोहराई और बताया कि कुछ दिन पहले जब रवि ससुराल आया था तब भी उसने आत्मदाह करने की धमकी दी थी।

परिवार के इन आरोपों ने यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या यह केवल पत्नी के लापता होने का सदमा था या इसके पीछे लंबे समय से चला आ रहा घरेलू कलह और हिंसा जिम्मेदार थी। पड़ोसियों के अनुसार रवि और ज्योति के बीच संबंध पिछले कुछ वर्षों से सामान्य नहीं थे। आर्थिक तंगी, काम का दबाव और आपसी अविश्वास ने रिश्ते को खोखला कर दिया था। चार छोटे बच्चों की जिम्मेदारी के बीच दोनों के बीच तनाव बढ़ता गया और अंततः ज्योति ने घर छोड़ने जैसा कठोर फैसला ले लिया।

एक नंबर अनेक मदद

मोबाइल पर इंटरनेट न होने पर भी आपकी सेवा में हाज़िर ,भारतीय रेल की हेल्पलाइन संख्या 139

(जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा एवं त्वरित सहायता के उद्देश्य से भारतीय रेल द्वारा अखिल भारतीय हेल्पलाइन संख्या 139 संचालित की जा रही है। यह हेल्पलाइन 24 घंटे, सप्ताह के सभी दिनों यात्रियों के लिए उपलब्ध है। आपके मोबाइल पर इंटरनेट की सुविधा न हो या आपके मोबाइल में नेटवर्क न हो, आप 139 नंबर पर एसएमएस भेज कर भारतीय रेल की इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसम्पर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार एसएमएस माध्यम पर यह सेवा इस तरह काम करती है कि यदि आपको अपनी ट्रेन की वर्तमान स्थिति जाननी है तो SPOT के बाद स्पेस देते हुए ट्रेन का नंबर लिखकर 139 पर अपना एसएमएस भेजें और यदि किसी विशेष दिन की ट्रेन की वर्तमान स्थिति जाननी है तो SPOT के बाद स्पेस देते हुए ट्रेन का नंबर और फिर स्पेस देते हुए DDMMYY फॉर्मेट में दिनांक लिखकर 139 पर अपना एसएमएस भेजें। ठीक इसी तरह किसी विशेष दिन की विशेष स्टेशन पर ट्रेन की वर्तमान स्थिति जानने के लिए SPOT के बाद स्पेस देते हुए ट्रेन का नंबर फिर स्पेस देते हुए DDMMYY और उसके बाद स्पेस देते हुए स्टेशन का कोड लिखकर 139 पर अपना एसएमएस भेजें। किसी ट्रेन का अगर आपको रुट जानना है तो

S. No	Service	SMS Format to 139	Example
1	PNR Enquiry	SMS "PNR <10 digit PNR number>"	Example: PNR 1234567890
2	Train Current Position	SMS "SPOT <Train number>"	Example: SPOT 12561
3	Train Current Position for Specific Date	SMS "SPOT <Train number> <DDMMYY>"	Example: SPOT 12561 020125
4	Train Current Position for Specific Date & Station	SMS "SPOT <Train number> <DDMMYY> <Station Code>"	Example: SPOT 12561 020125 CNB
5	Train current Position for Station Today	SMS "SPOT <Train number> <Station Code>"	Example: SPOT 12561 CNB
6	Train Route	SMS "ROUTE <Train number>"	Example: ROUTE 12561
7	Train Scheduled Arrival / Departure	SMS "AD <Train number> <Station code>"	Example: AD 12859 NDLS
8	RailMadad Complaint	SMS "MADAD <Complaint description>"	Example1: MADAD cleaning is required in my coach and my pnr is 1234567890 Example2: MADAD late running of train and my pnr is 1234567890 Example3: MADAD Catering staff overcharged me for coffee and my pnr is 1234567890
9	Parcel Status	SMS "PRR <PRR Reference number>"	Example: PRR 1234567890

ROUTE के बाद स्पेस देते हुए ट्रेन का नंबर लिखकर 139 पर अपना एसएमएस भेजें।

यदि किसी यात्री को ट्रेन का निर्धारित आगमन और प्रस्थान जानना है तो AD के बाद स्पेस देते हुए ट्रेन नंबर और उसके बाद स्पेस देते हुए स्टेशन कोड लिखकर इस फॉर्मेट में 139 पर अपना एसएमएस भेजें। रेल मदद में रेल सुविधा के परिप्रेक्ष्य में अपनी शिकायत MADAD के बाद स्पेस देते हुए अपने पीएनआर नंबर सहित शिकायत का विवरण 139 नंबर पर एसएमएस करें। इस सुविधा के माध्यम से आप अपना बुक किये हुए पार्सल का स्टेटस PRR के बाद स्पेस देते हुए अपना पार्सल रिफरेन्स लिखकर 139 नंबर पर एसएमएस कर भी जान सकते है।

हेल्पलाइन 139 के माध्यम से यात्री, ट्रेन से संबंधित पूछताछ एवं जानकारी, टिकट, आरक्षण एवं रद्दीकरण से जुड़ी जानकारी, ट्रेन की समय-सारिणी एवं लाइव रनिंग स्टेटस, शिकायत दर्ज करना एवं शिकायत की स्थिति जानना, आपात स्थिति में त्वरित सहायता, स्वच्छता, सुरक्षा, खानपान एवं अन्य यात्री सुविधाओं से संबंधित शिकायतें सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। यात्री कॉल, एसएमएस अथवा मोबाइल के माध्यम से हेल्पलाइन 139 पर संपर्क कर सकते हैं। यह सेवा बहुभाषी है, जिससे यात्रियों को अपनी भाषा में सहायता प्राप्त होती है। पश्चिम रेलवे का वडोदरा मंडल यात्रियों से अनुरोध करता है कि यात्रा के दौरान किसी भी समस्या, असुविधा या आपात स्थिति में हेल्पलाइन 139 का उपयोग करें और सुरक्षित एवं सुगम यात्रा सुनिश्चित करें।

20 जनवरी 2026 से 15 अप्रैल तक साबरमती रेलवे स्टेशन पर नए प्रवेश एवं निकास द्वार की व्यवस्था

(जीएनएस)। साबरमती रेलवे स्टेशन पर पुनर्विकास कार्य तीव्र गति से प्रगति पर है। साबरमती (धरमनगर साइड) नई स्टेशन बिल्डिंग का निर्माण पूर्ण हो चुका है जबकि अन्य पुनर्विकास कार्य प्रगति पर है। यात्रियों की सुविधा एवं यातायात व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने के उद्देश्य से 20 जनवरी 2026 से 15 अप्रैल 2026 तक आगमन एवं प्रस्थान हेतु नए प्रवेश एवं निकास द्वार तथा पिक-अप एवं ड्रॉप की व्यवस्था लागू की जा रही है। विवरण इस प्रकार है:

1. प्रस्थान करने वाले यात्रियों हेतु प्रवेश एवं निकास व्यवस्था

प्रवेश द्वार (Entry Gate): यात्रियों के वाहनों का प्रवेश MMTS बिल्डिंग (बुलेट ट्रेन स्टेशन) के पास (ग्रीन लाइन) से किया जाएगा।

यात्री नवनिर्मित स्टेशन बिल्डिंग में प्रवेश कर लिफ्ट, एस्कलेटर एवं सीढ़ियों के माध्यम से सेकंड फ्लोर से होते हुए सभी प्लेटफार्मों तक पहुंच सकेंगे।

यात्रियों को ड्रॉप करने वाले वाहन वर्तमान प्रवेश द्वार से बाहर निकल सकेंगे।

2. आगमन करने वाले यात्रियों हेतु निकास एवं पिक-अप व्यवस्था

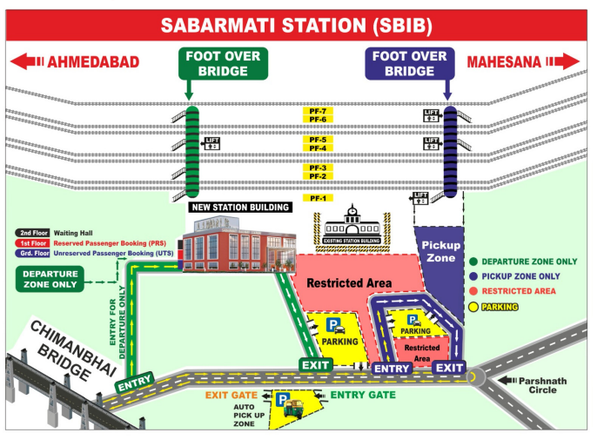

निकास द्वार (Exit Gate): महेसाणा साइड फुट ओवर ब्रिज के पास (पर्पल लाइन) से निकास की व्यवस्था की गई है।

इसी स्थान पर यात्रियों के लिए पिक-अप जोन भी निर्धारित किया गया है।

3. पार्किंग सुविधा

यात्रियों की सुविधा के लिए निकास द्वार के निकट दो स्थानों पर पार्किंग की व्यवस्था की गई है।

4. प्लेटफार्म कनेक्टिविटी

सभी प्लेटफार्म (PF-1 से PF-7) दोनों फुट ओवर ब्रिज द्वारा आपस में जुड़े हुए हैं तथा कलोल साइड फुट ओवर ब्रिज के सभी प्लेटफॉर्म पर यात्रियों के लिए लिफ्ट की सुविधा उपलब्ध है।

5. नवनिर्मित स्टेशन बिल्डिंग में यात्री सुविधाएं

भूतल (Ground Floor): अनारक्षित टिकट बुकिंग (UTS)

प्रथम तल (First Floor): आरक्षित टिकट बुकिंग (PRS)

द्वितीय तल (Second Floor): प्रतीक्षालय

सभी यात्रियों से अनुरोध है कि वे नई यातायात व्यवस्था, संकेतकों तथा रेलवे एवं आरपीएफ एवं रेलकर्मियों के निर्देशों का पालन करें।

वैश्विक चुनौतियों के बीच भारतीय निर्यात की धीमी पर मजबूत वापसी

(जीएनएस)। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में जारी उतार-चढ़ाव, भू-राजनीतिक तनाव और मांग में अनिश्चितता के बावजूद भारतीय निर्यात ने दिसंबर महीने में सकारात्मक संकेत दिए हैं। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक देश का निर्यात 1.87 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 38.5 अरब डॉलर तक पहुंच गया, जो यह दर्शाता है कि वैश्विक विपरीत परिस्थितियों के बीच भी भारतीय उद्योग अपनी पकड़ बनाए रखने में सफल रहा है। यह बढ़त भले ही सीमित हो, लेकिन मौजूदा वैश्विक आर्थिक माहौल में इसे उत्साहजनक माना जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि प्रमुख बाजारों में मांग के स्थिर होने और कुछ क्षेत्रों के बेहतर प्रदर्शन ने निर्यात को सहारा दिया है। हालांकि इस सकारात्मक तस्वीर के साथ एक दूसरी हकीकत भी जुड़ी हुई है। दिसंबर में आयात में अपेक्षाकृत तेज वृद्धि दर्ज की गई, जिसके कारण व्यापार घाटा और चौड़ा हो गया। देश का कुल आयात 8.7 प्रतिशत बढ़कर 63.55 अरब डॉलर पर पहुंच गया। आयात और निर्यात के बीच बढ़ते अंतर के कारण व्यापार घाटा 25.04 अरब डॉलर के स्तर पर जा पहुंचा, जो पिछले महीनों की तुलना में अधिक है। नवंबर 2025 में यह घाटा 24.53 अरब डॉलर था, जबकि दिसंबर 2024 में यह 22 अरब डॉलर के आसपास रहा था। इससे साफ है कि कच्चे तेल, सोना, इलेक्ट्रॉनिक सामान और औद्योगिक कच्चे माल की बढ़ती मांग ने आयात बिल को ऊपर धकेला है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के आंकड़े यह भी बताते हैं कि चालू वित्त वर्ष 2025-26 के पहले नौ महीनों यानी अप्रैल से दिसंबर के दौरान निर्यात और आयात दोनों में वृद्धि दर्ज की गई है। इस अवधि में वस्तु निर्यात 2.44 प्रतिशत बढ़कर 330.29 अरब डॉलर तक पहुंच गया, जबकि आयात 5.9 प्रतिशत की दर से बढ़ते हुए 578.61 अरब डॉलर रहा। इसके परिणामस्वरूप कुल व्यापार घाटा 248.32 अरब डॉलर के स्तर पर पहुंच गया है। अर्थशास्त्रियों के अनुसार यह स्थिति भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए मिश्रित संकेत देती है—एक ओर घरेलू मांग मजबूत है, लेकिन दूसरी ओर निर्यात की रफ्तार अपेक्षित गति नहीं पकड़ पा रही है। दिसंबर के आंकड़ों में सबसे उल्लेखनीय बात यह रही कि कुछ प्रमुख क्षेत्रों ने निर्यात को मजबूती प्रदान की। इंजीनियरिंग उत्पाद, इलेक्ट्रॉनिक्स, समुद्री उत्पाद और औषधि क्षेत्र ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए कुल निर्यात वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया। खासतौर पर इलेक्ट्रॉनिक्स और इंजीनियरिंग सेक्टर में वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में भारत की बढ़ती हिस्सेदारी का असर दिखाई देने लगा है। अमेरिका, चीन और संयुक्त अरब अमीरात जैसे प्रमुख व्यापारिक साझेदार देशों को निर्यात में स्थिर प्रगति दर्ज की गई, जो भारतीय उत्पादों की बढ़ती स्वीकार्यता को दर्शाता है। वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल के अनुसार वैश्विक स्तर पर चल रही चुनौतियों के बावजूद भारतीय निर्यातकों ने लचीलापन दिखाया है। उन्होंने कहा कि कई विकसित देशों में मांग सुस्त रहने, लाल सागर मार्ग में बाधाओं और कच्चे माल की कीमतों में उतार-चढ़ाव के बाद भी भारतीय उद्योग नए बाजारों में अवसर तलाश रहा है।

फियो को भारत के विदेश व्यापार में लगातार तेज़ी को लेकर उम्मीद; वैश्विक चुनौतियों के बावजूद अप्रैल-दिसंबर 2025 के दौरान निर्यात में 4.33 प्रतिशत की वृद्धि

(जीएनएस)। नई दिल्ली। 15 जनवरी, 2025: फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइजेशन (फियो) ने दिसंबर 2025 के व्यापार डेटा में दिखे भारत के विदेश व्यापार में लगातार और व्यापक वृद्धि पर मज़बूत उम्मीद जताई है। यह प्रदर्शन मौजूदा भू-राजनीतिक तनाव, सप्लाई-चेन में बदलाव, महंगाई के दबाव और प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में बढ़ते संरक्षणवाद के माहौल में और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

फियो के अध्यक्ष श्री एस सी रल्हन ने डेटा पर टिप्पणी करते हुए कहा कि अप्रैल-दिसंबर 2025 के दौरान भारत के निर्यात में लगातार विस्तार भारतीय निर्यातकों के लचीलेपन, फुर्ती और बढ़ती वैश्विक प्रतिस्पर्धा का स्पष्ट प्रमाण है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि निर्यातकों ने न केवल वैश्विक अनिश्चितताओं का सामना किया है, बल्कि एक सहायक नीतिगत माहौल की मदद से बाज़ार विविधीकरण, मूल्य संवर्धन और उत्पाद प्रतिस्पर्धा के माध्यम से उभरते अवसरों का भी लाभ उठाया है।

अप्रैल-दिसंबर 2025 के दौरान भारत का कुल निर्यात 4.33 प्रतिशत बढ़कर 634.26 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि पिछले वित्तीय वर्ष की इसी अवधि में यह 607.93 बिलियन डॉलर था। इस अवधि के दौरान वस्तु निर्यात 330.29 बिलियन डॉलर रहा, जो अप्रैल-दिसंबर 2024-25 में 322.41 बिलियन डॉलर की तुलना में 2.44 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। अकेले दिसंबर 2025 में निर्यात 1.87 प्रतिशत बढ़कर 38.51 बिलियन डॉलर हो गया, जो प्रमुख उत्पाद क्षेत्रों में लगातार मांग को दर्शाता है। श्री रल्हन ने कहा कि वैश्विक व्यापार प्रवाह में अस्थिरता को देखते हुए यह प्रदर्शन विशेष रूप से उत्साहजनक है, और यह निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सरकारी पहलों की प्रभावशीलता को दर्शाता है, जिसमें नीतिगत निरंतरता, निर्यात सुविधा उपाय, बेहतर लॉजिस्टिक्स, व्यापार प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण और एमएसएमई निर्यातकों को लक्षित समर्थन शामिल है।

आयात के मोर्चे पर, अप्रैल-दिसंबर 2025 के दौरान भारत का कुल आयात 4.95 प्रतिशत बढ़कर 730.84 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि पिछले साल इसी अवधि में यह 696.37 बिलियन डॉलर था। वस्तु आयात 5.90 प्रतिशत बढ़कर 578.61 बिलियन डॉलर हो गया, जो अप्रैल-दिसंबर 2024-25 में 546.36 बिलियन डॉलर था। दिसंबर 2025 में आयात 63.55 बिलियन डॉलर रहा, जबकि एक साल पहले यह 58.43 बिलियन डॉलर था, जिसके कारण व्यापार घाटा 25 बिलियन डॉलर रहा।

श्री रल्हन ने बताया कि आयात में बढ़ोतरी एनर्जी प्रोडक्ट्स, इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी और इंडस्ट्रियल इनपुट के ज़्यादा इनफ्लो मजबूत घरेलू मैन्युफैक्चरिंग एक्टिविटी, इंफ्रास्ट्रक्चर विस्तार और निवेश मांग का संकेत देते हैं, जो मध्यम अवधि की आर्थिक वृद्धि के लिए अच्छे संकेत हैं।

अप्रैल-दिसंबर 2025 के दौरान, इंजीनियरिंग गुड्स, पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स, इलेक्ट्रॉनिक गुड्स, ड्रग्स और फार्मास्यूटिकल्स, रत्न और आभूषण, रसायन, रेडीमेड गारमेंट्स, सूती वस्त्र, हथकरघा उत्पाद, चावल और समुद्री उत्पाद शीर्ष निर्यात वस्तु के रूप में उभरे। आयात के मामले में, प्रमुख वस्तुओं में पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स, इलेक्ट्रॉनिक गुड्स, सोना, मशीनरी, परिवहन उपकरण, अलौह धातु, रसायन, कोयला, प्लास्टिक और लोहा और इस्पात शामिल थे।

श्री रल्हन ने आगे बताया कि भारत के शीर्ष निर्यात गंतव्य—अमेरिका, यूएई, चीन, नीदरलैंड, ब्रिटेन, जर्मनी, बांग्लादेश, सिंगापुर, सऊदी अरब और हांगकांग—एक अच्छी तरह से विविध और लचीले निर्यात पदचिह्न को प्रदर्शित करते हैं। यह विविधीकरण ऐसे समय में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जब भू-राजनीतिक संघर्षों, प्रतिबंधों, शिपिंग व्यवधानों और रणनीतिक पुनर्गठन के कारण वैश्विक व्यापार मार्गों को नया आकार दिया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि अमेरिका और यूरोप जैसी उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के साथ भारत की लगातार मजबूत भागीदारी, उभरते बाजारों और क्षेत्रीय भागीदारों के साथ गहरे व्यापार संबंधों के साथ, भारत को एक विश्वसनीय, भरोसेमंद और प्रतिस्पर्धी वैश्विक व्यापार भागीदार के रूप में मजबूत करता है। बांग्लादेश, सिंगापुर और सऊदी अरब को बढ़ते निर्यात भी क्षेत्रीय एकीकरण, विकासशील देशों के बीच सहयोग और हिंद-प्रशांत और मध्य पूर्व में रणनीतिक साझेदारी के महत्व को रेखांकित करते हैं।

श्री रल्हन ने दोहराया कि सराहनीय निर्यात प्रदर्शन भारत के निर्यातकों के सामूहिक प्रयासों और सरकार की सक्रिय और सुविधाजनक व्यापार नीतियों का परिणाम है। आगे बढ़ते हुए, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि निरंतर नीतिगत समर्थन, तेज लॉजिस्टिक्स, स्थिर व्यापार समझौते और बाजार विविधीकरण पर निरंतर ध्यान भारत की निर्यात वृद्धि की गति को और तेज करने के लिए महत्वपूर्ण होगा।